चन्दामामा

जुलाई १९७१

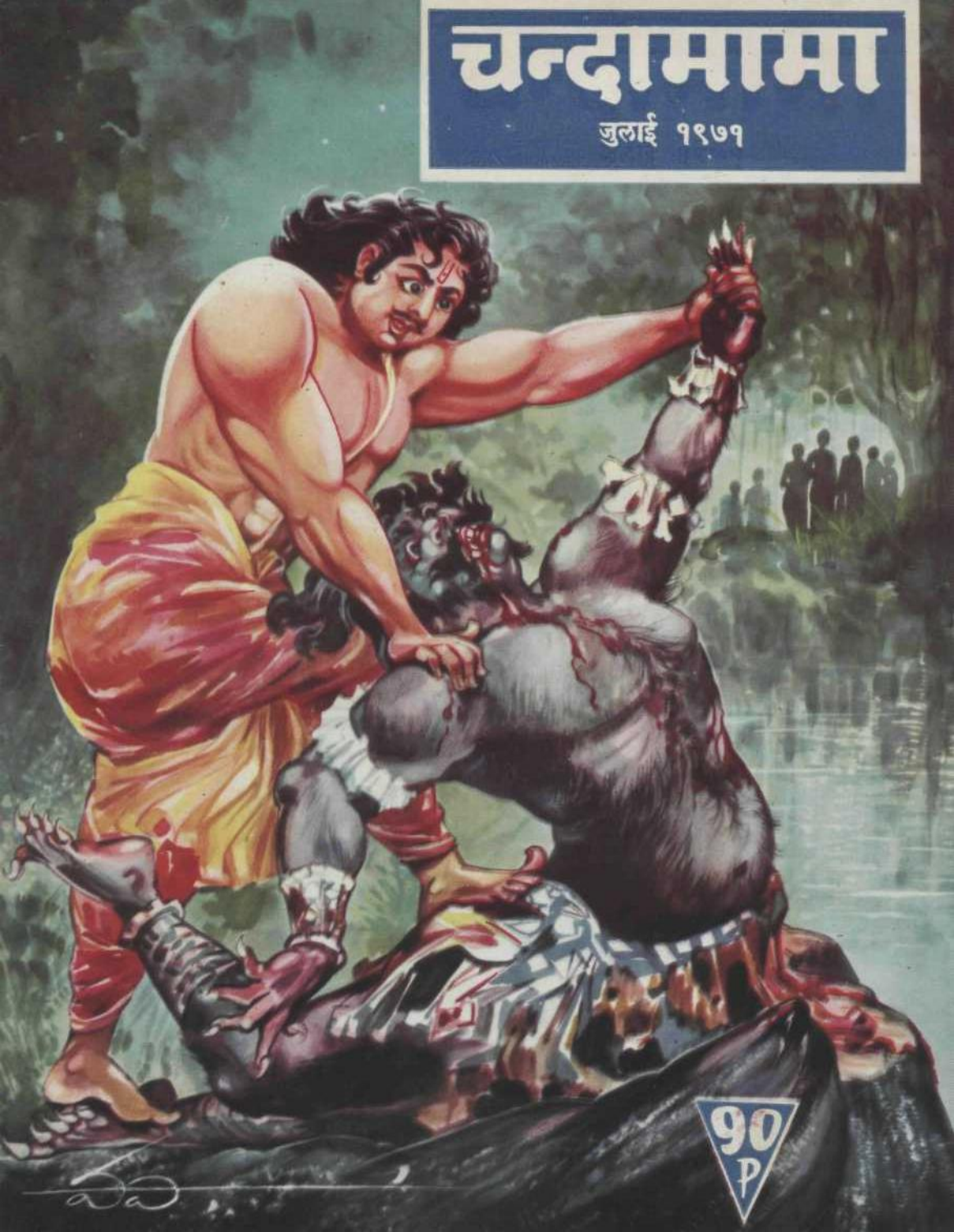

90 P

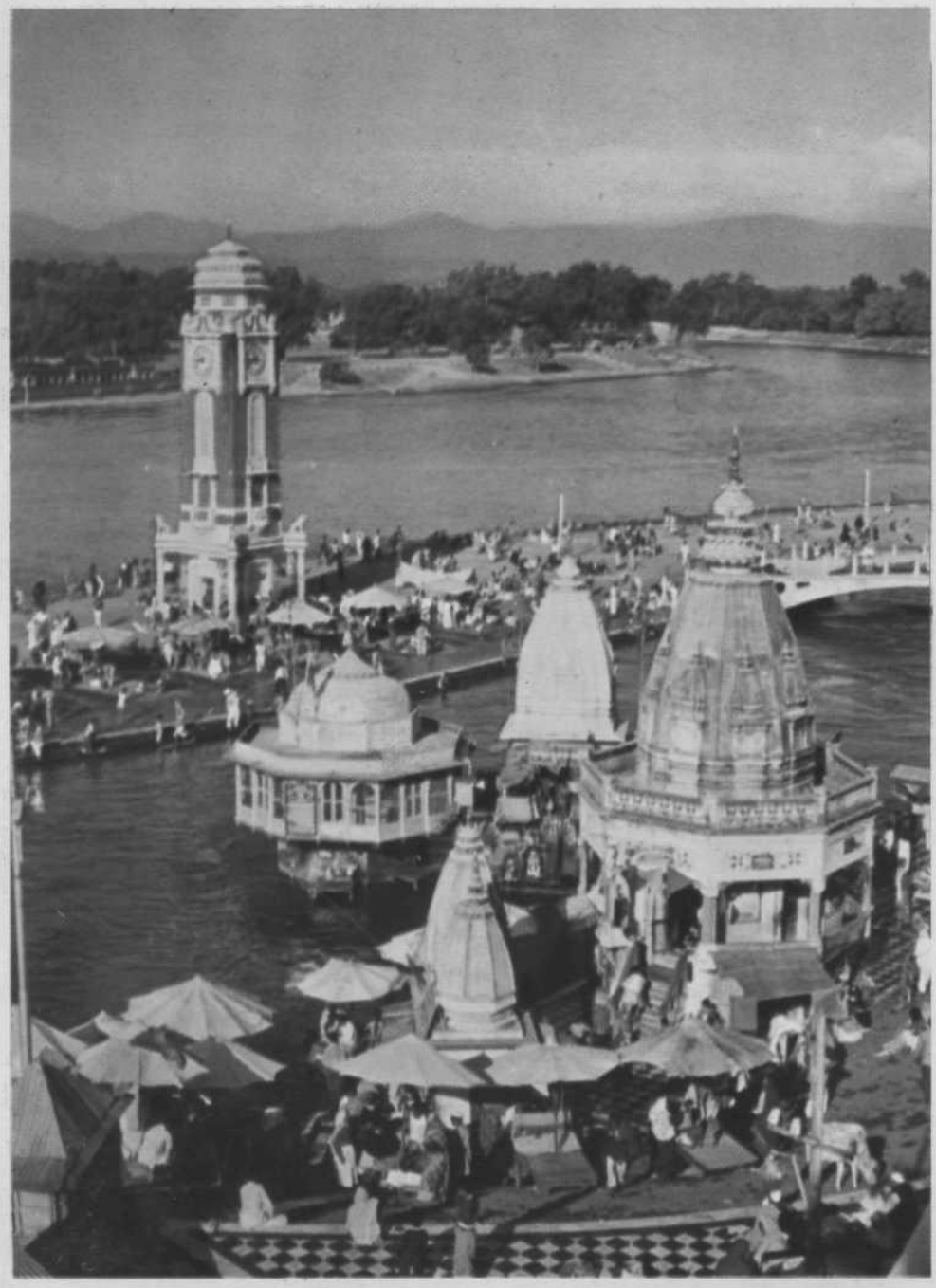

everest/981/PP hin

ऊँचा नाम! ऊँचा काम!
क्या टॉनिक से इतना फ़र्क़ पड़ता है?

जी हां! इन्क्रिमिन* आप के बच्चों की भूख जगा कर उन्हें बढ़ना सिखाती है!

यह बढ़ने के दिन हैं, इन्क्रिमिन* के दिन!

▼ इन्क्रिमिन सिरप (ऑयरन युक्त) बड़े बच्चों के लिए – १७५ मि.ली. और ५७ मि.ली.

▼ इन्क्रिमिन् १० मि.ली. ड्रॉप्स: दूध पीते बच्चों के लिए

Lederle सभी कैमिस्टों के यहाँ प्राप्य. इन्क्रिमिन के निर्माता हैं लेडरली–एक अन्तरराष्ट्रीय विश्वसनीय नाम. लेडरली डिवीज़न: सायानामिड इंडिया लिमिटेड, २५४/डी२, डॉ. एनी बेसेन्ट रोड, बम्बई–२५

*अमैरिकन सायानामिड कम्पनी का रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क

लिटास–INC.15-500 HI

फ़ोरहॅन्स टूथपेस्ट से नियमित रूप से ब्रश करने से मसूढ़ों की तकलीफ़ और दाँतों की सड़न दूर ही रहती है।

क्योंकि फ़ोरहॅन्स टूथपेस्ट दाँतों और मसूढ़ों, दोनों की रक्षा करता है।
यह दाँतों के डाक्टर का बनाया हुआ टूथपेस्ट है। इस टूथपेस्ट में मसूढ़ों की रक्षा के लिए कई खास तत्व मिले होते हैं।
मसूढ़ों की तकलीफ़ और दाँतों की सड़न रोकने का सबसे बढ़िया तरीक़ा है, दाँतों को नियमित रूप से सुबह और रात को फ़ोरहॅन्स टूथपेस्ट से ब्रश करना। आपके बच्चे को यह ज़रूरी बात सिखाने का समय यही है–उसका बचपन। जी हाँ, अभी, इसी उम्र में उनमें सीखने की बड़ी लगन रहती है। इसलिए यह शुभ शुरूआत आज ही से क्यों न की जाय!

फ़ोरहॅन्स से दाँतों की देखभाल सीखने में देर क्या सबेर क्या

फ़ोरहॅन्स
–दाँतों के एक डाक्टर का बनाया हुआ टूथपेस्ट

मुफ़्त! "दाँतों और मसूढ़ों की रक्षा" नामक रंगीन सूचना पुस्तिका
१० भाषाओं में मिलती है। मँगवाने का पता है: मैनर्स डेण्टल एडवाइज़री ब्यूरो, पोस्ट बैग १००३१, बम्बई-१ बी आर

नाम: _____ उम्र _____

पता: _____

_____

*कृपया (डाक-खर्च के लिए) २० पैसे के टिकट साथ भेजिए और इनमें से अपनी पसन्द की भाषा के नीचे रेखा खींच दीजिए: अंग्रेज़ी, हिन्दी, मराठी, गुजराती, उर्दू, बंगाली, तामिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड़

'C. 1'

89F 182 Hin

ताज़गी के पास आइये
अपनी प्यास बुझाइये

गोल्ड स्पॉट की अनोखी ताजगी और लाजवाब स्वाद का मजा लीजिये। इसमें आपको ताजे फलों जैसा स्वाद मिलेगा। इसकी ताजगी के क्या कहने! ऐसी ताजगी तो आपको प्रकृति की गोद में झूलने वाले झरनों में ही मिल सकेगी। इसका रसास्वादन कर आप मस्ती में झूम उठेंगे।

जी भर के जियो... गोल्ड स्पॉट पियो!

mcm/pb/38 hn

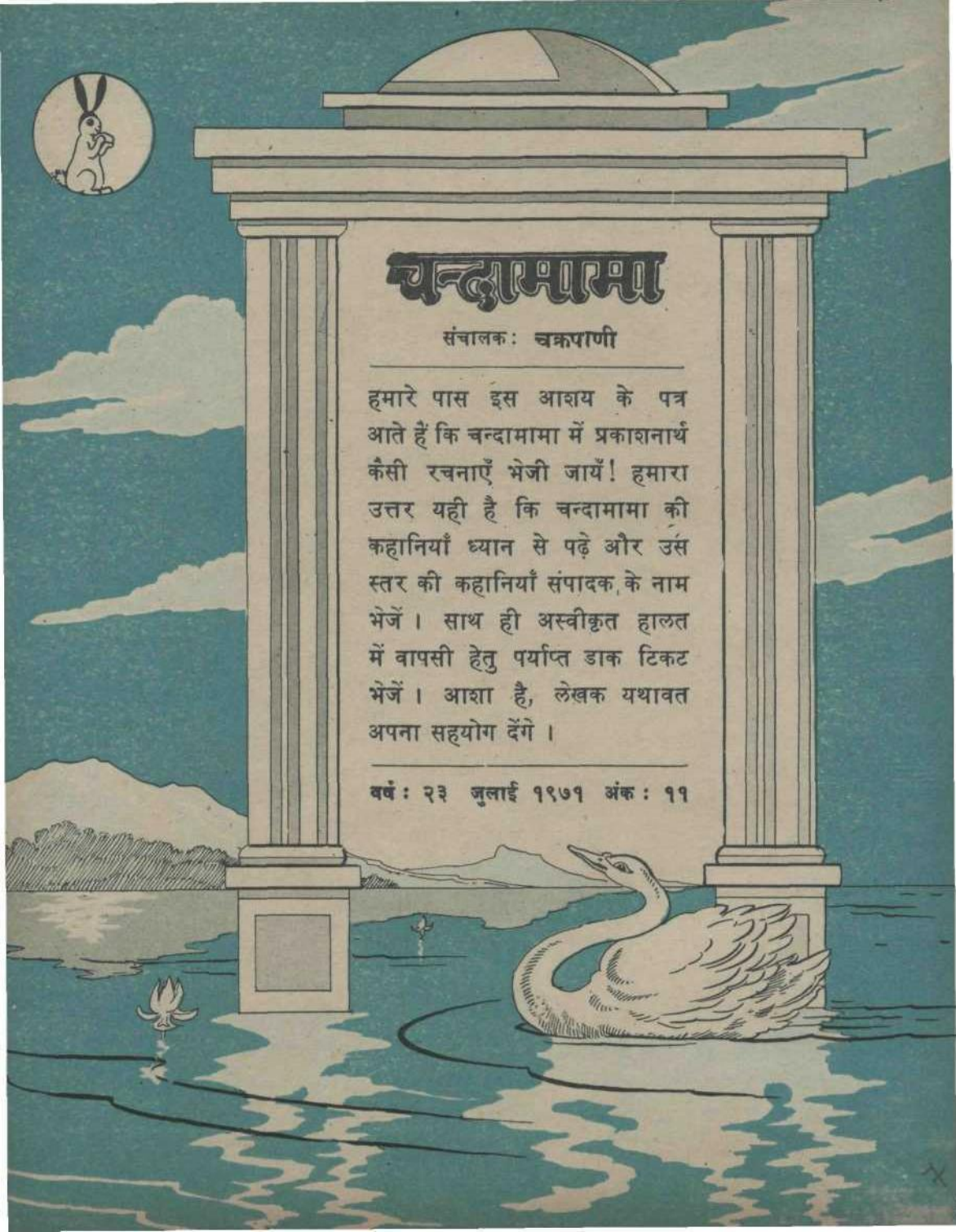

चन्दामामा

संचालक: चक्रपाणी

हमारे पास इस आशय के पत्र आते हैं कि चन्दामामा में प्रकाशनार्थ कैसी रचनाएँ भेजी जायँ! हमारा उत्तर यही है कि चन्दामामा की कहानियाँ ध्यान से पढ़े और उस स्तर की कहानियाँ संपादक के नाम भेजें। साथ ही अस्वीकृत हालत में वापसी हेतु पर्याप्त डाक टिकट भेजें। आशा है, लेखक यथावत अपना सहयोग देंगे।

वर्ष: २३ जुलाई १९७१ अंक: ११

अमर वाणी

सुलभाः पुरुषा लोके सततं प्रियवादिनः
अप्रियस्य च पथ्यस्य वक्ता, श्रोता च दुर्लभः ॥ १ ॥

[प्रिय वचन सुनानेवाले अनेक होते हैं, परंतु अप्रिय वचन सुनने-सुनानेवालों का मिलना कठिन है ।]

य दैवोपनतं दुःखं सुखं तद्धि रपांतरं
निर्वाणाय तरुच्छाया तप्तस्य हि विशेषतः ॥ २ ॥

[दुख के बाद प्राप्त होनेवाला सुख आनंददायक होता है । जो धूप में तप्त होता है, उसे ही पेड़ की छाया के सुख के आनंद का अनुभव होता है ।]

वह्नि स्तस्य जलायते, जलनिधिः कुल्यायते, तत्क्षणात्
मेरुः स्वल्पशिलायते, मृगपतिः सद्यः कुरंगायते,
व्यालो माल्यगुणायते, विषरसः पीयूषवर्षायते,
यस्यांगेखिल लोकवल्लभ तमं शीलं समुन्मीलति ॥ ३ ॥

[सब लोगों के द्वारा प्रशंसा करने योग्य शीलवान के लिए अग्नि पानी जैसा है । मेरुपर्वत शिलाखण्ड जैसा है, सिंह उसके लिए हिरण के समान, सर्प पुष्पमाला जैसा और विष अमृततुल्य है ।]

भला - बुरा

बाँस का रहस्य

ज्येष्ठादेवी और लक्ष्मीदेवी बहनें थीं।

लक्ष्मीदेवी के भक्तों की संख्या अधिक थी। पर ज्येष्ठादेवी की कोई पूजा नहीं करता था। इसलिए ज्येष्ठादेवी अपनी छोटी बहन लक्ष्मी से ईर्ष्या करती थी।

एक दिन लक्ष्मीदेवी एक सौ रत्नों को लेकर चल पड़ी। ज्येष्ठादेवी ने देखा और पूछा–"अरी, तुम जा कहाँ रही हो? किसके लिए ये सब रत्न?"

"दीदी, तुम इन रत्नों को मत छुओ। बेचारा एक गरीब आदमी उपवास करते हुए मेरी कृपा की प्रतीक्षा कर रहा है। उसे ये रत्न देने जा रही हूँ।" लक्ष्मीदेवी ने जवाब दिया।

"अरी, मेरा हाथ लग जाने से तेरे ये रत्न कोयले थोड़े ही बन जाते हैं? मेरे हाथ दे दो, मैं ही उसे दे आती हूँ।" ज्येष्ठादेवी ने कहा। लाचार होकर लक्ष्मीदेवी ने वे रत्न ज्येष्ठादेवी के हाथ दिये। ज्येष्ठादेवी उन रत्नों को एक लंबे पोलवाले बाँस में भरकर श्रीनिवास नामक उस दरिद्र के घर आयी।

सवेरे उठते ही श्रीनिवास ने अपने सिरहाने उस बाँस को देखा। उसे आश्चर्य हुआ। वह सोचने लगा कि 'अभी तो मैं ठीक से चल–फिर पाता हूँ, इसकी क्या ज़रूरत है।' यह सोचते वह बाँस लेकर तालाब की ओर चल पड़ा।

रास्ते में एक लड़के से उसकी मुलाक़ात हुई। उस लड़के ने श्रीनिवास से पूछा–"अजी, ऐसा बाँस कहाँ मिलता है? मेरे दादा ने एक बाँस ख़रीद लाने के लिए मुझे छवन्नी दी है।"

"चाहे तो तुम इसे ले लो।" श्रीनिवास ने लड़के से छवन्नी ली और उसे बाँस देकर भेज दिया। श्रीनिवास तालाब के

रमा श्रीवास्तव

पास गया, छवन्नी मेंड पर रखकर नहाने के लिए तालाब में उतर पड़ा ।

एक नटखट लड़के ने छवन्नी को देखा, चुपके से छवन्नी उठाकर भाग खड़ा हुआ ।

यह सब देखनेवाली लक्ष्मीदेवी ने अपनी दीदी ज्येष्ठादेवी से कहा–"देखती हो न? मेरी बात तुमने नहीं मानी । तुमने अपने हाथ से जो छवन्नी दी, उसे वह न मिली ।"

ज्येष्ठादेवी नाराज़ होकर बोली–"तुम क्या कर सकती थी?"

"मैं दिखा दूंगी कि क्या कर सकती हूँ?" लक्ष्मीदेवी ने हँसते हुए कहा ।

इस बीच पोते के हाथ से बाँस लेकर दादा बोला–"अरे, यह बाँस भारी क्यों है? इसे मैं उठा नहीं सकता । कहाँ से लाये हो?"

"श्रीनिवास को छवन्नी देकर लाया हूँ, दादा!" पोते ने जवाब दिया ।

"इसे लौटाकर छवन्नी ले लो और कोई हल्की लाठी लेते आओ ।" दादा ने कहा ।

लड़का श्रीनिवास के पास लौट आया और बोला–"अजी, मेरे दादा कहते हैं कि यह बाँस भारी है, इसे वापस लेकर छवन्नी लौटा दो ।"

श्रीनिवास बाँस को वापस लेते हुए बोला–"छवन्नी खो गयी है, बेटा, कल-परसों लौटा दूंगा । तुम अपने दादा से यह बात कह दो ।"

लड़का चला गया । उसी समय एक बुजुर्ग वहाँ आ पहुँचा और बोला–"अजी, मेरा लड़का तुम्हारी छवन्नी उठा लाया है, इसे ले लो ।" वह छवन्नी देकर चला गया ।

श्रीनिवास वह छवन्नी ले जाकर दादा को दे आया ।

यह घटना देख, ज्येष्ठादेवी को बड़ा गुस्सा आया । वह श्रीनिवास को मार डालने के ख्याल से कालानाग का रूप धरकर उसके घर पहुँची । साँप को देखते ही श्रीनिवास ने बाँस को उस पर फेंक दिया । बाँस तो टूट गया, मगर उसके पोल से सारे रत्न बाहर निकल आये ।

देना का धर्म

प्राचीनकाल में काशी पर एक राजा राज्य करता था। उसके पट्टमहिषी से दो पुत्र पैदा हुए। राजा ने उनके नाम महिंसास और चन्द्रकुमार रखे। महिंसास ही बोधिसत्व था। चन्द्रकुमार जब छोटा ही लड़का था, तभी पट्टमहिषी का देहांत हो गया।

राजा ने फिर दूसरा विवाह किया और उस रानी को पट्टमहिषी बनाया। रानी बड़ी सुंदर थी। राजा को बहुत चाहती थी। कुछ समय बाद उस रानी के गर्भ से एक लड़का पैदा हुआ। उसका नाम सूर्यकुमार रखा गया। राजा ने अपने पुत्र को देख प्रसन्न हो रानी से पूछा–"तुम अपने पुत्र के लिए एक वरदान माँग लो।"

"जब मुझे ज़रूरत पड़ेगी, तब मैं आप से एक वर माँग लूँगी।" पट्टमहिषी ने जवाब दिया।

कुछ साल बीत गये। सूर्यकुमार युवा हो गया। तब पट्टमहिषी ने राजा से पूछा–"आप ने मेरे पुत्र के लिए एक वर माँगने को कहा था। अब मेरे पुत्र को राज्य दिला दीजिये।"

"जब दो बड़े पराक्रमी पुत्र हैं, तब छोटे को राज्य मैं कैसे दे सकता हूँ।" पट्टमहिषी की बात को काटते हुए राजा ने जवाब दिया।

राजा को संदेह हुआ कि पट्टमहिषी अपने बड़े पुत्रों की हानि कर सकती है, इसलिए दूसरे दिन सवेरे राजा ने बोधिसत्व और चन्द्रकुमार को बुलाकर समझाया–"बेटे, मैंने सूर्यकुमार के जन्म के समय तुम्हारी सौतेली माँ से एक वर माँगने को कहा था। वह इस समय अपने पुत्र के लिए राज्य माँगती है। मैं उसे राज्य देना नहीं चाहता। मगर तिरिया चरित बड़ा

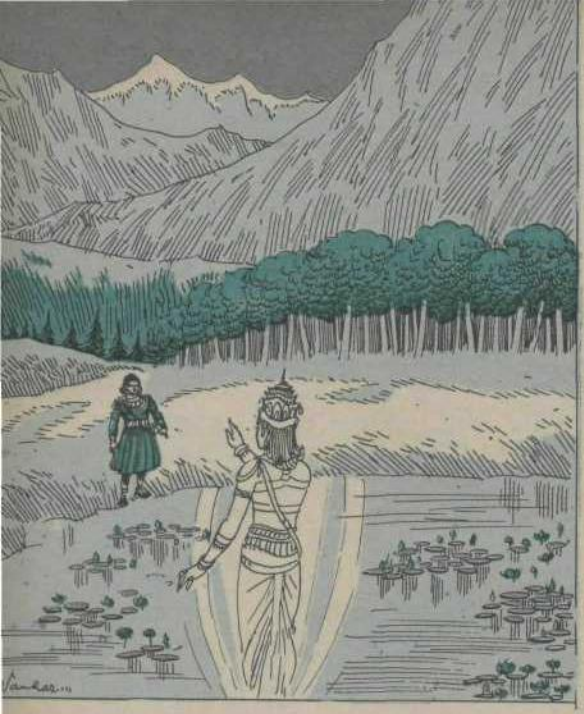

विचित्र होता है। वह तुम दोनों की हानि कर सकती है। इसलिए तुम दोनों तुरंत जंगलों में चले जाओ और मेरे मरने के बाद लौटकर इस राज्य पर शासन करो।"

राजा ने आँसू बहाते हुए दोनों पुत्रों के माथे चूमकर विदा किया। वे दोनों अपने पिता को प्रणाम करके चले गये।

सूर्यकुमार को यह बात मालूम न थी। अपने बड़े भाइयों को यात्रा की तैयारी करते देख उसे भी उनके साथ जाने की इच्छा हुई और उनके साथ चल पड़ा।

तीनों भाई हिमालयपर्वत पर पहुँचे। बोधिसत्व रास्ते के किनारे एक पेड़ के नीचे बैठ गया और सूर्यकुमार से बोला—"भैया, देखो, उस तालाब में जाकर नहाओ, पानी पीकर लौटते वक़्त हम दोनों के लिए कमल-पत्रों में पीने के लिए पानी ले आओ।"

वह तालाब एक यक्ष का था जो एक जल राक्षस था। कुबेर ने उस तालाब को जल राक्षस को सौंपते हुए आदेश दिया था कि तुम ऐसे लोगों की हानि न करो जो देवताओं का धर्म जानते हो, बाक़ी लोग अगर इस तालाब में उतर पड़े तो उनको खा डालो। मगर याद रखो कि जो लोग तालाब में न उतरे, उनकी हानि न करो।"

उस दिन से लेकर वह यक्ष जो भी तालाब में उतरता, उससे सवाल करता—"देवता का धर्म क्या है?" जो जवाब न देता, उसको खा डालता था। इसलिए सूर्यकुमार के तालाब में उतरते ही यक्ष ने पूछा—"क्या तुम देवता का धर्म जानते हो?" "हाँ, जानता हूँ! देवता-धर्म का मतलब सूर्य और चन्द्र हैं।" सूर्यकुमार ने जवाब दिया।

"तुम देवता के धर्म को नहीं जानते।" यह कहते यक्ष सूर्यकुमार को अपने निवास में ले गया और बन्दी बनाया।

सूर्यकुमार को न लौटते देख बोधिसत्व ने चन्द्रकुमार को तालाब के पास भेजा। यक्ष ने उससे भी देवता-धर्म का मतलब

पूछा। चन्द्रकुमार ने उत्तर दिया–"देवता-धर्म का मतलब चार दिशाएँ हैं।" यक्ष ने उसे भी ले जाकर अपने निवास में बन्दी बनाया।

चन्द्रकुमार को भी लौटते न देख बोधिसत्व ने सोचा कि अपने भाई किसी खतरे में फँस गये हैं और वह खुद चल पड़ा। तालाब के पास उसे दो आदमियों के तालाब में उतरने के निशान तो दिखाई दिये, मगर तालाब से बाहर आने के लक्षण दिखाई न दिये। बोधिसत्व ने सोचा कि 'इस तालाब में कोई राक्षस है।' तब वह म्यान से तलवार निकालकर युद्ध के लिए तैयार हो गया।

बोधिसत्व को तालाब में न उतरते देख जल राक्षस एक जंगली के वेष में उसके पास आया और बोला–"महाशय, तालाब में उतरकर नहा-धोकर, प्यास बुझाये बिना आप किनारे क्यों खड़े हुए हैं?"

बोधिसत्व को संदेह हुआ कि तालाब का मालिक यक्ष राक्षस ही इस रूप में उसके पास आया है। इसलिए उसने पूछा–"मेरे भाइयों को तुमने ही बन्दी बनाया है न?"

"जी हाँ।" यक्ष ने उत्तर दिया।

"क्यों बन्दी बनाया?" बोधिसत्व ने पूछा।

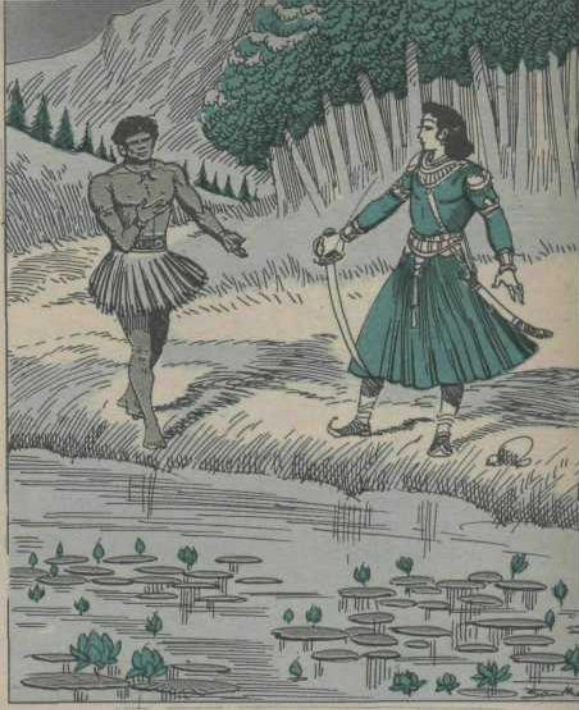

"जो लोग इस तालाब में उतरते हैं, वे मेरे अधीन हो जाते हैं।" यक्ष ने कहा।

"तालाब में उतरनेवाला हर एक व्यक्ति तुम्हारे अधीन हो जायगा?" बोधिसत्व ने फिर पूछा।

"जो देवता का धर्म जानते हैं, वे मेरे अधीन नहीं होते!" यक्ष ने कहा।

"मैं तुमको देवता का धर्म बता सकता हूँ।" बोधिसत्व ने कहा।

"तब तो कहिये। मैं सुनता हूँ।" यक्ष ने कहा।

"अभिमान, निंदा करने में भय, हितकार्य तथा शांत स्वभाव के उत्तम

पुरुष का धर्म ही देवता का धर्म है।" बोधिसत्व ने समझाया।

यक्ष बोधिसत्व का उत्तर सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ। उसके स्नान-भोजन इत्यादि का प्रबंध किया। उचित सत्कार के बाद बोला–"मैं आप पर प्रसन्न हूँ। आपके भाइयों में से मैं एक को आप को सौंप सकता हूँ। किसको ले आऊँ?"

"मेरे सबसे छोटे भाई को लेते आओ।" बोधिसत्व ने उत्तर दिया।

"हे महाशय, आप देवता का धर्म तो जानते हैं, मगर उसे अमल करने की रीति नहीं जानते?" यक्ष ने कहा।

"सो कैसे?" बोधिसत्व ने पूछा।

"आप अपने छोटे भाइयों में बड़े को छोड़ छोटे को माँग रहे हैं और बड़े का आदर घटा रहे हैं!" यक्ष ने कहा।

"हे यक्ष! मैं देवता-धर्म का आचरण करता हूँ, इसलिए छोटे भाई को माँगता हूँ! मेरे छोटे भाई की वजह से ही मैं जंगल में आया हूँ। मेरी सौतेली माँ ने छोटे भाई के लिए राज्य माँगा। हमारा हित चाहनेवाले पिताजी ने हमको जंगलों में भेजा। मैं अपने छोटे भाई को छोड़ अपने राज्य को लौटूँ और यह बता दूँ कि किसी यक्ष ने उसे निगल डाला है तो क्या कोई मेरी बात पर यक़ीन करेगा?" बोधिसत्व ने कहा।

"शहबाश! आप न केवल देवता का धर्म जानते हैं, बल्कि उसका अनुभव भी रखते हैं!" ये बातें कहकर यक्ष ने चन्द्रकुमार तथा सूर्यकुमार को भी लाकर बोधिसत्व को सौंप दिया।

कुछ समय बाद उन्हें मालूम हुआ कि बूढ़े राजा का स्वर्गवास हो गया है, तब बोधिसत्व अपने दोनों भाइयों के साथ अपनी राजधानी को लौटा। राज्याभिषेक करके चन्द्रकुमार को युवराज बनाया और सूर्यकुमार को सेनापति का पद देकर शासन करने लगा।

शिलारथ

[१]

[खड्गवर्मा की गैर हाज़िरी में भैरव जीवदत्त तथा मुखिये की बेटी को बन्दी कर पहाड़ पर ले जाने लगे, खड्गवर्मा ने देखा और गाँव के मुखिये और उसके अनुचरों को साथ ले भैरवों का पीछा करने लगा। गणलिंगेश्वर जब जीवदत्त का वध करने जा रहा था, तब गाँव के एक युवक ने अपने पालतू भालू को उस पर भड़काया। बाद.....]

भालू की गुर्राहट सुनते ही भैरव सब चौंक पड़े और पास के टीलों की ओर दौड़ पड़े। उन्होंने देखा कि भालू उनका पीछा कर रहा है। गणलिंगेश्वर एक दम चौंक पड़ा और चिल्ला उठा– "अरे, तुम लोग भागते जा रहे हो? शर्म नहीं आती? भालू हमारा क्या बिगाड़ सकेगा? पहले तुम लोग भालू को भालों से भोंक कर मार डालो। इस बीच में इस बंदी का कलेजा फाड़कर भैरव की बलि देता हूँ।"

गणलिंगेश्वर की बात पूरी भी न हो पायी थी कि खड्गवर्मा का बाण उसकी कलई में जा लगा। गणलिंगेश्वर पीड़ा से कराह उठा। उसकी मुठ्ठी में से तलवार छूट कर नीचे गिर गयी। मौक़ा पाकर खड्गवर्मा तथा गाँव के लोग टीले की ओट में से बाहर आये। उन्हें

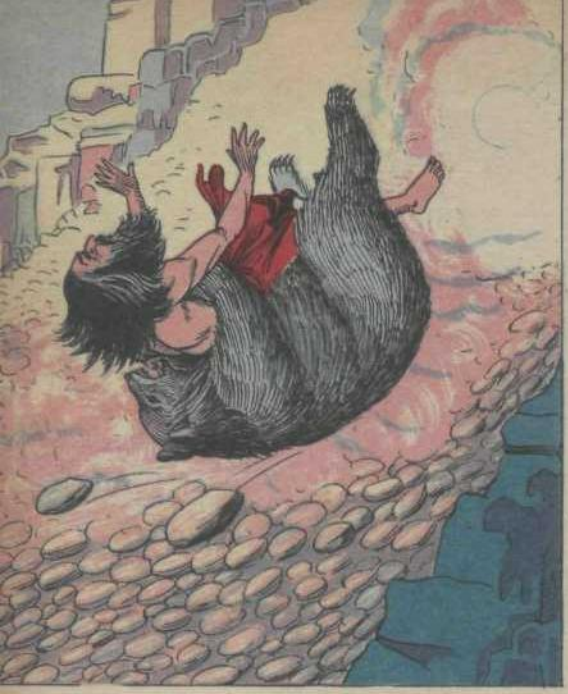

भागनेवाला भैरवों का दल साफ़ दिखाई दे रहा था।

"धोखा है, दगा है। देवता के कार्य में विघ्न डालने वाले इन नास्तिकों के सर काट कर भालों में चुभोकर ऊपर उठा दो।" गणलिंगेश्वर ने अपने अनुचरों को आदेश दिया।

"यह कमबख्त भागने के बजाय चिल्लाते हुए अपनी जान खतरे में डाल रहा है। इसे घेर कर पकड़ लो। यह भागने न जावे। इसी क़मबख्त ने हमें सताया है। इसका वध करने से बाक़ी भैरव हमारे गुलाम बन जायेंगे।" खड्गवर्मा ने गाँववालों को चेतावनी दी और वह जीवदत्त की ओर भागा।

गणलिंगेश्वर ने अपने अनुचरों को तो आदेश दिया कि गाँववालों पर टूट पड़ो, मगर वह खुद पहाड़ उतरने के ख्याल से दौड़ पड़ा। इसे देख गणलिंगेश्वर के शिष्यों ने उसका अनुसरण किया। उन भागनेवालों में से एक का सर भालू पकड़ने को हुआ। पर उसके पंजों में उस व्यक्ति की क़मर आ गयी। वह डर के मारे चिल्ला पड़ा। दूसरे क्षण वह भी फिसलकर नीचे गिर पड़ा और भालू के साथ ढलाई की ओर लुढ़कने लगा।

ये सब कुछ क्षणों में हो गया। यह देख जीवदत्त और मुखिये की बेटी अचरज में आ गयी। खड्गवर्मा ने जीवदत्त के बंधन खोलते हुए कहा—"हम लोग भाग्यवान हैं, अगर मेरे आने में एक मिनट की भी देरी हो जाती तो यह भैरव तलवार से तुम्हारा सर काट डालता। तुम जल्दी तैयार हो जाओ।"

"खड्गवर्मा! मैं पहले से ही यही सोच रहा था कि तुम मेरी सहायता करने के लिए ज़रूर आओगे। भागनेवाले ये दुष्ट भवानी को भी खींचकर नहीं ले जा रहे हैं न? पहले तुम उस कन्या का ख्याल रखो।" जीवदत्त ने कहा।

"बेटी भवानी, तुम पहाड़ की तलहटी की ओर न जाओ। उन भैरवों की बात हम

बाद को देख लेंगे।" गाँव का मुखिया चिल्ला उठा।

सबने पहाड़ी तलहटी की ओर देखा। भवानी पहाड़ी के छोर पर खड़े हो शिलाओं को भैरवों पर लुढ़का रही थी। भैरव उन शिलाओं से बचते जल्दी पहाड़ उतर कर पास के जंगल में भागने की कोशिश कर रहे थे। भालू उस भैरव युवक के साथ लुढ़कते बीच-बीच में उसका सर नोचने का प्रयत्न कर रहा था।

"लगता है कि मेरे भालू को भैरव मारने की कोशिश में हैं।" ये शब्द कहते वह युवक भी जल्दी जल्दी पहाड़ी तलहटी की ओर दौड़ने लगा। उसके साथ कुछ ग्रामवासी भी पहाड़ से उतरने के लिए चल पड़। वे भैरवों का पीछा करके उन्हें पकड़ना चाहते थे।

खड्गवर्मा ने उनको रोक कर मुखिये से कहा–"भैरवों का दल आसानी से हमारी पकड़ में न आयेगा। वे भाग गये। उनको जाने दीजिये। मगर इस बात का ख्याल रखें कि वे लोग फिर से आपके गाँव में न घुसे। ये लोग बड़े ही खतरनाक होते हैं। इन का अंत कर देना अच्छा होगा, वरना सदा सतर्क रहिये। इसका अच्छा इंतज़ाम कर लीजिये।"

भवानी अपने पिता के पास जाकर खड़ी हुयी और बोली–"उन दुष्टों में से एक भी हाथ न लगा। कम से कम एक भी मिल जाता तो ले जाकर गाँव के

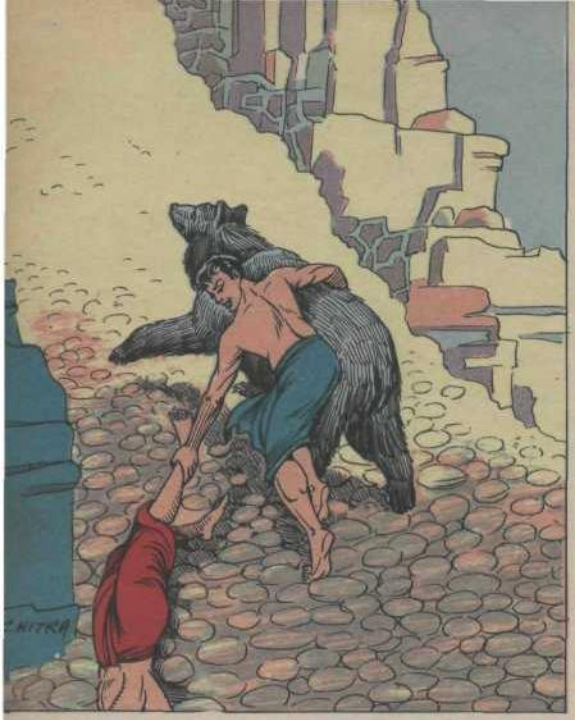

बीच उसे फाँसी लगा कर पेड़ से लटकवा देते। तब जाकर मेरे मन को शांति मिलती।"

"उन्हें अपने पापों का फल मिलेगा, तुम जान से बच गयी, बेटी! बस, मुझे और क्या चाहिये?" मुखिये ने अपनी बेटी को समझाते हुए कहा।

मुंशी खड्गवर्मा तथा जीवदत्त की ओर आँखें फाड़कर देखते हुए बोला–"तुम दोनों महान वीर हो, इसमें कोई संदेह नहीं। तुम्हारे साहस का समाचार राजा को सुनाकर उनसे पुरस्कार दिलवायेंगे। चलो, हमारे साथ। कुछ दिन हमारे गाँव में रहकर हमारा आतिथ्य स्वीकार कीजिये।"

"इस मेहर्बानी के लिए धन्यवाद! हमें अपने रास्ते जाने दीजिये। हमें एक जरूरी कार्य पर जाना है। विलंब होने से हमारे कार्य के बिगड़ने की संभावना है। बस, हमको कुछ नहीं चाहिये।" जीवदत्त ने कहा।

"हमारे गाँव आकर हमारे आतिथ्य को स्वीकार किये बिना ही चले जायेंगे? यह तो अन्याय है। मेरी रक्षा करने के लिए आप लोगों ने जो श्रम उठाया, उसके प्रति में कृतज्ञता किन शब्दों में प्रकट कर सकती हूँ?" भवानी ने कहा।

"हम लोगों को थोड़े दिन बाद पद्मपुर लौट कर तुम्हारे राजा के दर्शन करने हैं। उस वक़्त तुम्हारे गाँव में आकर कुछ दिन तुम्हारे अतिथि बन कर रहेंगे।" जीवदत्त ने कहा।

भवानी कुछ कहने को थी कि इतने में गाँव का युवक चिल्ला पड़ा–"मेरे भालू ने भैरव को मार डाला है।"

सबने उस युवक की ओर देखा। उसके आगे भालू पहाड़ पर चढ़ रहा था। युवक मरे हुए भैरव का पैर पकड़े उसे घसीटते पहाड़ पर चढ़ रहा था।

"उसकी लाश को वहीं पर छोड़ आओ। यहाँ तक खींचकर क्यों ले आते हो?" खड्गवर्मा ने उस युवक से कहा।

मुंशी ने खड्गवर्मा और जीवदत्त की ओर घूमकर कहा–"यह युवक हमारे मुखिये का भानजा है। हमारे मुखिया साहब भवानी की शादी उसके साथ करना चाहते हैं। शायद अगले साल इन दोनों की शादी हो सकती है। इसीलिए वह भैरवों से सख्त नाराज़ मालूम होता है।"

"उफ़! यह बात है!" इन शब्दों के साथ जीवदत्त भवानी की ओर देख हँसते हुए बोला–"भवानी, हम दोनों संभवतः तुम्हारी शादी के पहले ही तुम्हारे गाँव में लौट आयेंगे। तुमने भालुओं जैसे भैरवों को डरा दिया। तुम्हारे होनेवाले पति ने भालू को ही पालतू बनाया।"

इस पर भवानी लजाते हुए अपने पिता की ओट में चली गयी। इतने में वह युवक भालू के साथ पहाड़ी के छोर पर आ पहुँचा। उसे देखते ही मुखिये ने क्रोध से कहा–"भैरव को जान के साथ पकड़ लाते तो हमें ख़ुशी होती। इस मरे हुए को नाहक़ यहाँ तक क्यों खींच लाये?" इसके बाद उसने भैरव की लाश पर ज़ोर से मुखिये ने लात मारी। लाश लुढ़कने लगी।

जीवदत्त ने मुखिये से कहा–"अब हमें आज्ञा दीजिये। आप लोग सकुशल गाँव लौट जाइये। रास्ते में भैरवों का दल

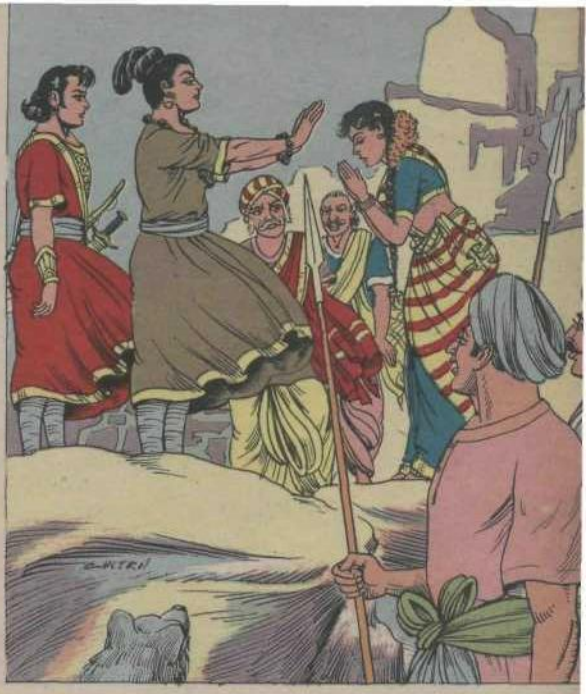

कहीं ताक में रहकर हमला करने का प्रयत्न करें। सावधानी से रहिये।"

ग्रामवासियों ने खड्गवर्मा और जीवदत्त को प्रणाम किया। भवानी ने आगे बढ़कर सर नवा कर उन दोनों को प्रणाम किया। जीवदत्त ने उसे आशीर्वाद दिया, तब वह एक दूसरे रास्ते से खड्गवर्मा के साथ चल पड़ा।

वे दोनों सौ गज दूर गये भी न थे कि इतने में मुंशी दौड़ता आया और पूछा–"साहब, आप लोग बुरा न माने, यह बताइये कि आप में से वीरभद्र कौन हैं? और रामभद्र कौन?"

इस सवाल का जवाब खड्गवर्मा देने को हुआ, उसके चेहरे पर क्रोध देख खड्गवर्मा

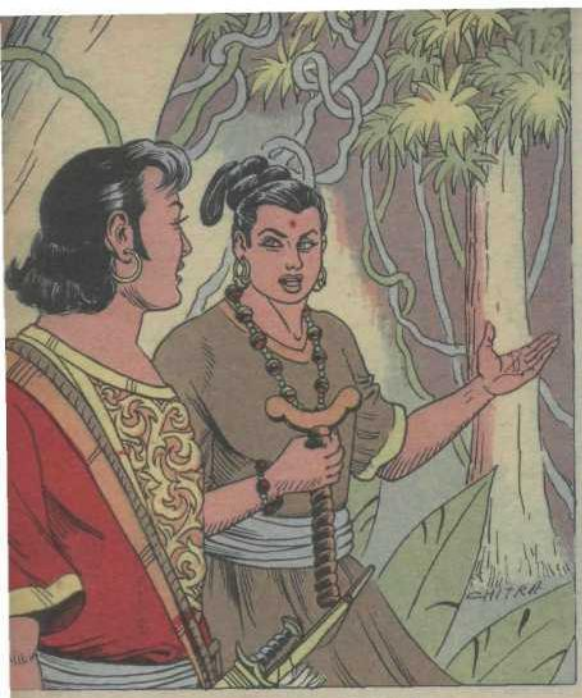

को रोकते हुए बोला–"मुंशी साहब, तुम वीरभद्र और रामभद्र की बात बिलकुल भूल जाओ। महेन्द्र नगर के राजा के पुत्र और उसके मित्रों की बात तुम लोगों के लिए किसी तरह से लाभदायक न होगी। हम दोनों में से कोई न वीरभद्र है और न रामभद्र! समझे!"

—मुंशी ने उन दोनों को फिर प्रणाम किया और लजाकर चला गया। खड्गवर्मा और जीवदत्त बड़ी मुश्किल से उस पहाड़ से उतर पड़े और एक घंटे बाद वे दोनों पास के जंगल में पहुँचे। वह जंगल दो ऊँचे पहाड़ों के बीच था। वहाँ पर मनुष्यों के चलने-फिरने के कोई लक्षण दिखाई न दिये। जहाँ-तहाँ खूंखार जानवरों के पैरों के निशान साफ़ दिखाई दे रहे थे।

"खड्गवर्मा! यह तो बड़ी तंगी घाटी मालूम होती है। मुझे संदेह हो रहा है कि सामने दिखाई देनेवाले पहाड़ को क्या हम सूर्यास्त के पहले उतर कर चले जा सकते हैं?" जीवदत्त ने कहा।

"भाई, हम पता लगायेंगे कि उस ऊँचे पहाड़ को चढ़कर पार करने के बदले कहीं सुरंग मार्ग तो नहीं है?" खड्गवर्मा ने सुझाया।

इसके बाद वे दोनों ऊँचे वृक्षों के नीचे से पहाड़ की ओर चल पड़े। दस-पंद्रह मिनट वे चल पाये थे कि उन्हें सौ गज़ के फ़ासले पर किसी के चलने की आवाज़ सुनाई देने लगी।

जीवदत्त हठात् रुक गया और बोला–"खड्गवर्मा! वहाँ पर चलनेवाला प्राणी आदमी है या जानवर?"

खड्गवर्मा चुपचाप पेड़ों की आड़ में से थोड़ी दूर आगे बढ़ा और आवाज़ होनेवाली उस दिशा की ओर देखा। वहाँ पर एक लंबी क़दवाला युवक अपने कंधे पर परशु रखकर दस-बारह फुट मोटे तनेवाले पेड़ के चारों तरफ़ घूम कर पहरा दे रहा था।

खड्गवर्मा को उस दृश्य को देख बड़ा आश्चर्य हुआ। उसे लगा कि इस जंगल में

जब इतने वृक्ष हैं तो वह इसी एक पेड़ का पहरा क्यों दे रहा है? उसने झट अपनी ओर बढ़नेवाले जीवदत्त को निकट आने का संकेत किया। जीवदत्त खड्गवर्मा के पास आया। उसने पहरा देनेवाले उस युवक को देखा।

"यह व्यक्ति पहरा ऐसा दे रहा है, मानों राजा के खज़ाने का पहरा दे रहा हो। चलो, उसे अपनी क़िस्मत पर छोड़ हम अपने रास्ते चले चलेंगे।" जीवदत्त ने कहा।

"नहीं, हम इस बात का रहस्य जान कर तब चलेंगे! वरना हमें ज़िंदगी भर यह सोचकर आश्चर्य और संदेह से परेशान होना पड़ेगा कि इस विचित्र करनी का कारण क्या होगा?" खड्गवर्मा ने समझाया।

"अच्छी बात है, तब तो तुम बड़ी सावधानी से छिपकर पहरेदार के पीछे के पेड़ की आड़ में खड़े हो जाओ। मैं सीधे उसके सामने जाकर उससे मिलता हूँ।" जीवदत्त ने कहा।

खड्गवर्मा एक-दो मिनट के अंदर पेड़ की आड़ में जा पहुँचा और तलवार खींचे खड़ा हो गया। जीवदत्त सूखे पत्तों पर आवाज़ करते उस युवक की ओर चला। उस आवाज़ को सुन कर युवक चौंक पड़ा और सर घुमा कर जीवदत्त की ओर देखा। दूसरे ही क्षण वह गरज कर बोला–"ठहरो, तुम कौन हो? यहाँ पर किसलिये आये हो?"

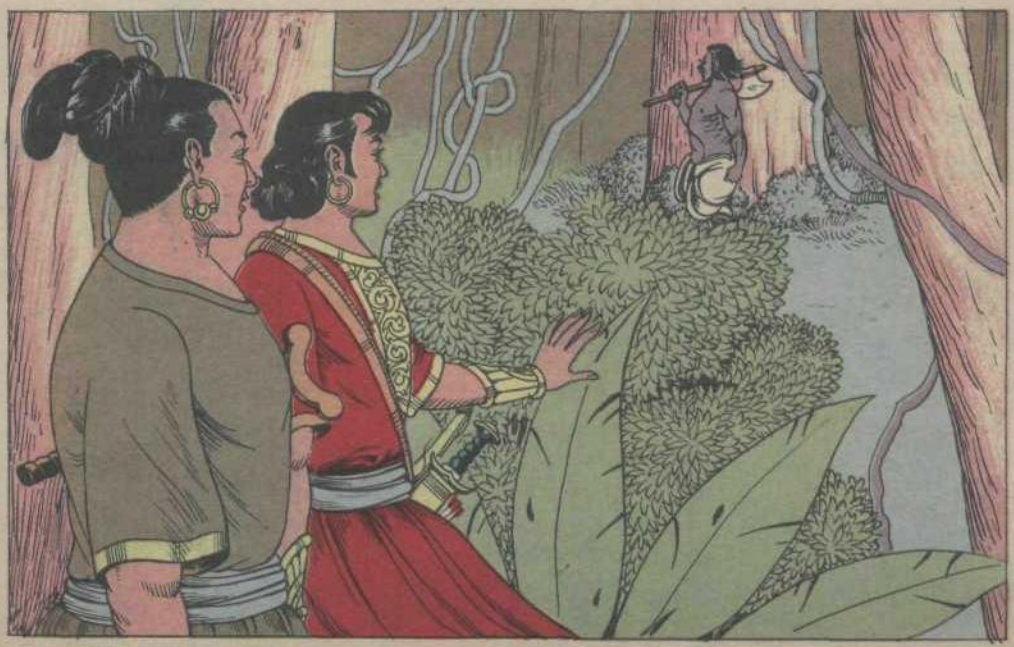

"मैं अपना परिचय दूँ तो भी तुम मुझ पहचान न सकोगे? तुम यह तो बताओ कि इस पेड़ की प्रदक्षिणा क्यों करते हो? तब मैं अपनी कहानी सुनाऊँगा।" जीवदत्त ने कहा।

"यह पेड़ नहीं, मेरे बहनोई के दुर्ग का बुर्ज है। यहाँ से कोई नया आदमी बहनोई के राज्य में न पहुँचे, इसके लिए मैं पहरा दे रहा हूँ।" युवक ने जवाब दिया, अपने परशु की धार को उंगलियों से छूकर देखते हुए।

"भाई, बुरा मत मानो! यह सब हमको पागलपन मालूम होता है। अगर तुम यहाँ पर पहरा न दोगे तो किसी को यह पता तक न चलेगा कि यहाँ पर क़िले का कोई बुर्ज भी है! जंगल में कितने ही पेड़ हैं, वैसा ही यह भी एक पेड़ है जिसका तुम पहरा दे रहे हो। मगर तुम परशु को कंधे पर रखकर पहरा देते हुए यह रहस्य सब पर प्रकट कर रहे हो!" जीवदत्त ने समझाया।

"तुम अपनी बकवास बंद कर यहाँ से चले जाओ!" इन शब्दों के साथ वह युवक परशु को उठाये जीवदत्त की ओर आगे बढ़ा।

जीवदत्त ने हँसते हुए उत्तर दिया– "मैं तो चला जाऊँगा। मगर तुम्हारे पीछे तलवार उठाये आगे बढ़नेवाले व्यक्ति की बात क्या होगी?"

युवक ने झट सर घुमा कर देखा। खड्गवर्मा युवक के पाँच-छे गज़ की दूरी पर तलवार उठाये खड़ा था। वह हँसकर बोला–"क्या तुम अपने को परशुराम का शिष्य समझते हो? अपने परशु को उतार दो और यह बताओ कि पेड़ का तना क़िले का बुर्ज कैसे हो सकता है? यह रहस्य हमें भी तो बताओ!"

युवक ने इस बार अपना सर घुमा कर जीवदत्त की ओर देखा। जीवदत्त दो-तीन गज़ के फ़ासले पर दण्ड को ऊपर उठाये खड़ा हुआ था। (और है)

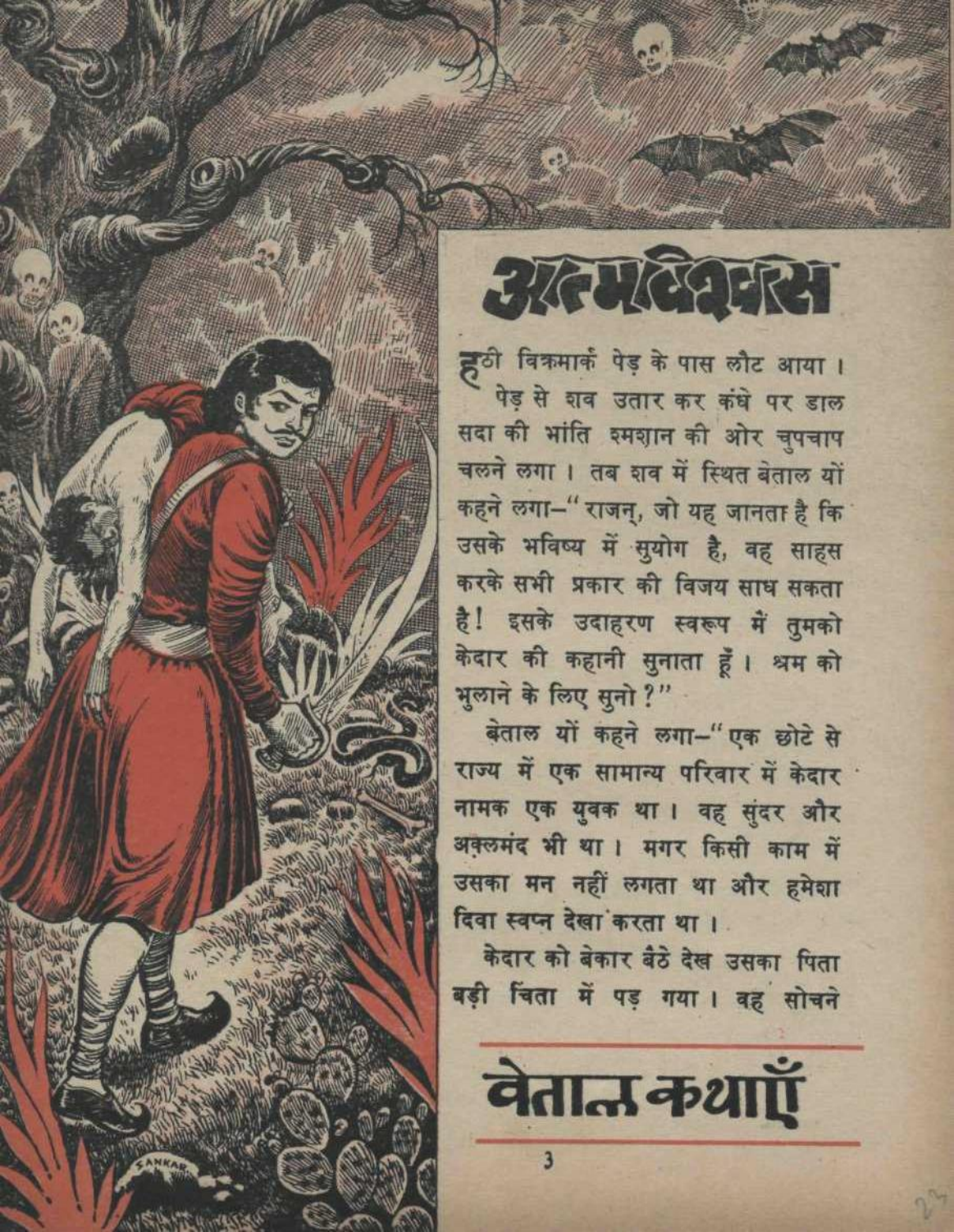

आत्मविश्वास

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया। पेड़ से शव उतार कर कंधे पर डाल सदा की भांति श्मशान की ओर चुपचाप चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल यों कहने लगा–"राजन्, जो यह जानता है कि उसके भविष्य में सुयोग है, वह साहस करके सभी प्रकार की विजय साध सकता है! इसके उदाहरण स्वरूप मैं तुमको केदार की कहानी सुनाता हूँ। श्रम को भुलाने के लिए सुनो?"

बेताल यों कहने लगा–"एक छोटे से राज्य में एक सामान्य परिवार में केदार नामक एक युवक था। वह सुंदर और अक़्लमंद भी था। मगर किसी काम में उसका मन नहीं लगता था और हमेशा दिवा स्वप्न देखा करता था।

केदार को बेकार बैठे देख उसका पिता बड़ी चिंता में पड़ गया। वह सोचने

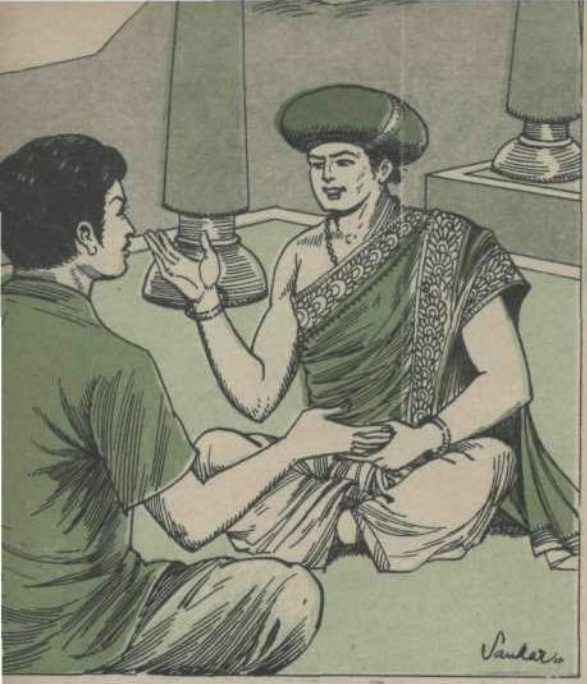

लगा कि यह बुद्धिमान लड़का किसी काम का नहीं रह जायगा। उसने अपनी यह चिंता अपने एक मित्र के सामने प्रकट की। वह मित्र एक मशहूर पंडित था। एक दिन पंडित ने केदार के घर पहुँचकर केदार से पूछा–"बेटा, यह बताओ, तुम्हारी कैसी इच्छायें हैं?"

"पंडितजी, मेरी तो इच्छा एक ही है। सुनते हैं कि हमारी राजकुमारी अपूर्व सुंदरी है। उसके साथ मैं विवाह करना चाहता हूँ, हमारे राजा के कोई पुत्र भी नहीं है, इसिलए राजकुमारी के साथ विवाह करने वाला राज्य का शासक भी बनेगा। मगर मैं जानता हूँ कि मेरी इच्छा की पूर्ति होना संभव नहीं है, फिर भी क्या करूँ? मैं अपनी इच्छा को दबा न पाता हूँ।" युवक ने कहा।

पंडितजी ने उसे सांत्वना देते हुए कहा–"तुमको निराश होने की ज़रूरत नहीं, ज़रा हाथ तो फैलाओ, मैं तुम्हारे हाथ की रेखाएँ देखना चाहता हूँ।"

केदार ने पंडितजी के आगे अपना हाथ बढ़ाया। पंडित ने सावधानी से बड़ी देर तक उन रेखाओं को देखा और कहा–"बेटा, तुम्हारी इच्छा अनहोनी नहीं है, तुमको राजा बनने का सुयोग प्राप्त है! तुम अवश्य राजकुमारी से विवाह करोगे।"

पंडित की बातें सुनकर केदार का उत्साह उमड़ पड़ा। उसने कहा–"तब तो मैं राजकुमारी से मिलकर उससे पूछूंगा कि वह मेरे साथ विवाह करे!"

पंडित ने हँसकर उत्तर दिया–"पगले, ऐसे महान कार्य आसानी से पूरे नहीं होते। तुमको राजकुमारी के दर्शन तक मिलना मुश्किल है। इसके लिए तुम्हें उचित प्रयत्न करना होगा। पहले तुम राजदरबार का कर्मचारी बन जाओ। धीरे-धीरे राजा का विश्वास प्राप्त करो। तब बड़ी मेहनत के साथ राजकुमारी के मन को जीतने का प्रयत्न करो। इस तरह अनेक रुकावटों को दूर करने के बाद ही

तुम राजकुमारी से विवाह कर सकते हो। बड़ी सव्रता और लगन के साथ अपने सुयोग को सार्थक बनाओ! तुमको अपने इस कार्य में अवश्य सफलता मिलेगी।"

पंडित की बातें सुनने पर केदार के मन में बड़ा परिवर्तन आया। वह पहले आलसी था। अब उसमें नया उत्साह पैदा हुआ। उसने राजा के दर्शन करके दरबार में नौकरी माँगी। राजा उसे देख प्रसन्न हुआ और राजमहल में नौकरी दी।

जहाँ तक हो सके, शीघ्र राजकुमारी के साथ विवाह करने के ख्याल से केदार अपने कार्य बड़ी लगन और अभिरुचि के साथ पूरा करता गया। राजा का उस पर विश्वास जम गया। केदार इस तरह व्यवहार करने लगा कि वह राजमहल शीघ्र ही उसका होने जा रहा है। किसी भी कार्य में कोई भूल होती तो वह सहन नहीं कर पाता था। ज़रूरत पड़ने पर अपने अधिकारियों की भी आलोचना करने से नहीं चूकता था। इस कारण से राजा और अंतःपुर की स्त्रियों का भी उस पर विश्वास जम गया।

बहुत जल्द ही केदार राजा और रानी का अंतरंगी सलाहकार बना। वह राजकुमारी की हर छोटी-सी ज़रूरत को जल्द पूरा करने लगा। वह विश्वासपात्र

ता था ही, साथ ही सुंदर और बुद्धिमान भी था। इस कारण क्रमशः राजकुमारी का केदार के प्रति अनुराग बढ़ता गया। वह अपनी समस्याओं को केदार के सामने रखती और उसकी सलाह लेने में उसे बड़ा आनंद मिलता।

राजा और रानी ने राजकुमारी का विवाह करने का निश्चय किया। अनेक राजकुमार राजकुमारी के साथ विवाह करने आगे आये। पर राजकुमारी को लगा कि उन सब में केदार ही अधिक योग्य व्यक्ति है।

जब राजा को मालूम हुआ कि राजकुमारी केदार के साथ विवाह करना

चाहती है, तब राजा ने कोई आपत्ति नहीं उठायी, बल्कि उन दोनों का विवाह कर दिया। उन दोनों का परस्पर अनुराग देख सब ने राजा के निर्णय की प्रशंसा की।

केदार अपने ससुर की सहायता से राजनीति के सभी कार्य सीखने लगा। उसमें भी बड़ी रुचि लेकर वह धीरे धीरे इस हालत में पहुँचा कि वही राजा को सलाह देने लगा। कुछ समय बाद बूढ़े राजा का देहांत हो गया। केदार गद्दी पर बैठा। इससे उसका सपना सच निकला।

मगर यह संतोष बहुत दिन तक क़ायम न रहा। दो पड़ोसी राजाओं ने इस बात से नाराज़ होकर केदार के राज्य पर हमला किया कि केदार क्षत्रिय न होते हुए भी राजगद्दी पर बैठा है। केदार डर गया। उसने सोचा कि अपने शत्रुओं से संधि करके उनका सामंत बनने में क्या हानि है?

इन्हीं दिनों में केदार को अपने पिता के मित्र पंडित की याद आयी। केदार ने आदर के साथ उस पंडित को बुला भेजा और पूछा–"पंडितजी, आपने एक बार मेरे हाथ की रेखाएँ देख जो कुछ कहा, वह सच निकला। अब मुझे युद्ध करना पड़ रहा है। फिर एक बार मेरा हाथ देख बताइये कि इस युद्ध में मैं विजयी होऊँगा कि नहीं।" इन शब्दों के साथ केदार ने पंडित के आगे हाथ बढ़ाया।

पंडित ने हँसकर बताया–"पगले, तुम समझते हो कि मैं ज्योतिष जानता हूँ। मगर मैं बिल्कुल नहीं जानता!"

केदार ने चकित होकर पूछा–"क्या आपने उस दिन मेरे हाथ में राजा बनने का सुयोग और राजकुमारी के साथ विवाह करने का प्रारब्ध नहीं देखा?"

"नहीं बेटा! यह सब केवल अभिनय था! दगा था!" पंडित ने उत्तर दिया।

केदार ने पंडित को अनेक पुरस्कार देकर भेज दिया, तब युद्ध की तैयारियाँ कीं और युद्ध में शत्रु राजाओं को हरा दिया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा– "राजन्, मेरा एक संदेह है। पंडित ने ज्योतिष शास्त्र जानने का अभिनय क्यों किया? केदार ने जब राजकुमारी से विवाह किया और राजा बनने के बाद भी पंडित का सम्मान नहीं किया, तब पंडित से जब यह मालूम हुआ कि उसने जो कुछ कहा था, सब झूठ है, यह जानने के बाद भी केदार ने पंडित का सम्मान क्यों किया? जो केदार शत्रुओं से युद्ध करने से डरता था, वह युद्ध की तैयारियाँ करके शत्रुओं को कैसे हरा सका? इन प्रश्नों का जवाब जानते हुए भी न दोगे, तो तुम्हारा सर टुकड़े-टुकड़े हो जायगा।"

इस पर विक्रमार्क ने उत्तर दिया– "केदार को केवल दिवा स्वप्न देखते चुप बैठे रहने के बदले, उसमें नयी प्रेरणा भरने के ख्याल से पंडित ने उसका हाथ देख अपने को ज्योतिष का ज्ञाता प्रकट किया। केदार की प्रबल इच्छा पहले ही जानकर, उसकी पूर्ति होने के लक्षण हाथ देख सही बताया। पंडित की प्रेरणा से ही केदार ने प्रयत्न किया। पंडित ने स्वयं न सोचा होगा कि केदार का प्रयत्न अवश्य सफल होगा। वास्तव में उसके प्रयत्न की सफलता का कारण केदार ही है। जब तक पंडित ने यह नहीं बताया कि वह ज्योतिषशास्त्र नहीं जानता, तब तक केदार अपने भाग्य पर ही निर्भर रहा। इसलिए वह युद्ध के लिए तैयार न हुआ। पर जब उसे यह मालूम हुआ कि उसका राजकुमारी के साथ विवाह करना, तथा राजा बन जाना, स्वयं उसके प्रयत्नों का ही फल है, तब केदार को पंडित की सहायता व प्रेरणा का फल विदित हुआ। इसीलिए उसने पंडित का सत्कार किया। तब उसे अपने प्रयत्न पर ही विश्वास जम गया। अंतः युद्ध की तैयारी करके विजयी बना।"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

ग्रहों की गति

वज्रगिरि नगर पर वज्रपाल शासन करता था। उसके मन में चक्रवर्ती बनने की इच्छा पैदा हुई। इसलिए उसने अनेक देशों के साथ युद्ध करके उन्हें जीत लिया और आख़िर चक्रवर्ती कहलाया। मगर वज्रपाल इससे संतुष्ट न हुआ। उसकी इच्छा और बढ़ती गयी। वह सोचने लगा कि जीतने के लिए और अनेक देश बाक़ी हैं। हो सके तो सारे संसार को जीता जा सकता है।

वज्रपाल के एक ही लड़की थी। उसका नाम पूर्णरेखा था। वह शिक्षिता और विवेकशीला थी। अपने पिता की राज्य-कांक्षा उसे पसंद न आयी। वह सोच रही थी, अब उसके पिता युद्ध करना बंद कर देगा, मगर वह एक के बाद दूसरे युद्ध की तैयारियाँ करता गया।

एक दिन संध्या को वज्रपाल ने अपनी पुत्री को बुला भेजा तो उसे पता चला कि वह राजोद्यान में है। राजा खुद राजकुमारी के पास गया और बोला–"बेटी, इस अंधेरे में यहाँ क्या कर रही हो?"

"आसमान की ओर देख रही हूँ, पिताजी!" पूर्णरेखा ने जवाब दिया।

"आसमान में देखने को क्या है, बेटी?" राजा ने पूछा।

"आसमान में विचरने के लिए जब इतना प्रदेश फैला हुआ है, तो ग्रह अपने राशि-चक्र से लगे रहकर क्यों घूमते हैं? यही सोचकर मैं आश्चर्य करती हूँ।" पूर्णरेखा ने उत्तर दिया।

यह बात वज्रपाल के दिल को लग गयी। उसने आगे युद्ध करना बंद कर दिया।

—नीरजा राय

अक्षय संपत्ति

प्राचीनकाल में बग्दाद नगर पर खलीफ़ा हारूनल रशीद शासन करता था। उसके मन में यह अहंकार भरा था कि उसके पास जितनी संपत्ति है, उतनी दुनिया में और किसी के पास नहीं है। उसे इस बात का घमण्ड भी था कि उसके जैसा कोई दान भी नहीं करता। ये बातें वह अक्सर लोगों से कहा भी करता था।

एक दिन खलीफ़ा अपनी दानशीलता की बढ़ा-चढ़ाकर तारीफ़ कर रहा था, वजीर जफ़र से यह सुना न गया। उसने खलीफ़ा की आँखें खोलनी चाही और कहा–"हुजूर! मनुष्य को अल्लाह के सामने विनम्र बने रहना चाहिये। घमण्ड करने के लिए मनुष्य के पास है ही क्या? ये सारी संपत्ति और सद्बुद्धि खुदा की दी हुई हैं। इन पर हमें घमण्ड नहीं करना चाहिए। आपकी दानशीलता की लोग प्रशंसा करें, मगर आपको उसकी प्रशंसा नहीं करनी चाहिए। अलावा इसके ऐसी संपत्ति अल्लाह ने आपको ही नहीं बल्कि दूसरों को भी दी है। बस्त्रा नगर में एक साधारण नागरिक है। उस युवक का नाम अबूअल कासिम है। उसके पास जो संपत्ति है, उतनी दुनिया में किसी चक्रवर्ती सम्राट के पास नहीं है। उसकी दानशीलता की तुलना आप ही क्या, दुनिया के कोई राजा भी नहीं कर सकते!"

ये बातें सुनते ही खलीफ़ा का चेहरा लाल हो उठा। उसकी आँखों से क्रोध उमड़ पड़ा। उसने जफ़र से कहा–"बेवकूफ़, क्या तुम नहीं जानते कि ऐसे सफ़ेद झूठ बोलने के अपराध में मैं मौत की सज़ा देता हूँ?"

"मैं आपकी क़सम खाकर कहता हूँ, हुजूर! मैंने जो कुछ कहा, सौ फ़ी सदी

प्रमीला कुमारी

सच है।" जफ़र ने कहा–"अगर आपको मेरी बातों पर यक़ीन न हो तो किसी को बस्त्रा भेजकर पता लगवाइये। वह जो कहेगा, उसके मुताबिक़ मुझे सज़ा दीजिये। पिछली बार में जब बस्त्रा गया था, तब मैं अबूअल कासिम का मेहमान बना था। उसकी संपत्ति देख मैं हैरान हो गया। मैं फिर एक बार आप से बताता हूँ कि उससे बढ़कर दानी दुनिया में दूसरा नहीं है।"

खलीफ़ा के मुंह से बात न निकली। गुस्से में पागल हो उसने सिपाहियों को हुक्म दिया कि जफ़र को क़ैद करे। तब वह रानी जुबेदा के महल में गया। खलीफ़ा का लाल चेहरा देख रानी का चेहरा सफ़ेद पड़ गया। उसने गुलाबी जल पीने को देते हुए कहा–"हुजूर! आप शांत हो जाइये।"

"बदमाश जफ़र की वजह से मेरा दिल परेशान हो गया है। उसने मेरी बातों को काट दिया और उल्टे ऐरे-गैरे कमबख्तों को आसमान पर चढ़ा रहा है।" इन शब्दों के साथ खलीफ़ा ने सारी बातें अपनी बीबी को सुनायीं।

जुबेदा ने समझ लिया कि जफ़र की जान खतरे में पड़ गयी है। एक ओर उसने खलीफ़ा का समर्थन करते हुए समझाया–"हुजूर! आप किसी को बस्त्रा भेजकर सच्ची हालत का पता लगाइये, तब तक जफ़र को मौत की सज़ा न दीजिये।"

जुबेदा की बातों से खलीफ़ा का दिल शांत हो गया। उसने कहा–"मैं भी सच्चा हाल जाने बिना जफ़र को सज़ा क्यों दूंगा? मैं जब तक अपनी आँखों से न देखूंगा तब तक मैं यक़ीन नहीं कर सकता। इसलिए मैं खुद जाकर अबूअल कासिम को देख आऊंगा। जफ़र ने यदि बढ़ा-चढ़ाकर कह दिया हो तो उसे मौत की सज़ा निश्चित है।"

जुबेदा ने बहुतेरा समझाया कि खलीफ़ा अकेले न जाये। मगर खलीफ़ा ने उसकी

बातों की परवाह न की। वह एक व्यापारी के वेश में उसी समय बस्त्रा के लिए रवाना हो गया।

खलीफ़ा बस्त्रा पहुँचकर वहाँ की एक सराय में ठहर गया। खाना तक खाये बिना सराय के चौकीदार को बुलाकर पूछा–"सुना है, इस नगर में अबूअल कासिम नामक कोई युवक है। वह जैसे दान देता है, वैसे कोई महाराजा भी नहीं दे पाता। क्या यह बात सच है?"

चौकीदार ने सर हिलाकर कहा–"अल्लाह की मेहरबानी है! उस महानुभाव की मेहरबानी का पात्र कौन नहीं बना है? यदि मुझे सौ मुंह होते तो भी मैं उनके दानों की तारीफ़ नहीं कर पा सकूंगा।" इतने में सराय में और व्यापारी आ पहुँचे, इसलिए चौकीदार उनको ठहराने की व्यवस्था करने चला गया।

खलीफ़ा रात को सराय में सोया, सवेरे उठकर बाजार में गया। दूकानों के खुलते ही एक दूकानदार के पास जाकर उसने अबूअल कासिम के घर का पता पूछा।

"लगता है, आप दूर देश से आये हैं। राजमहल में भी राजा को न जाननेवाले लोग हो सकते हैं, मगर इस नगर में अबूअल कासिम का घर न जाननेवाला

कोई न होगा!" दूकानदार ने जवाब दिया।

"मैं दूर देश से उसी युवक को देखने आया हूँ।" खलीफ़ा ने दूकानदार से कहा। दूकानदार ने खलीफ़ा के साथ एक लड़के को भेजा।

अबूअल कासिम का महल बूटोंवाले सफ़ेद पत्थरों से बना था। उसके क़िवाड़ों पर अमूल्य हरे रत्न जड़े थे। महल के आगे कुछ गुलाम खेलों में निमग्न थे। खलीफ़ा ने एक गुलाम को पुकारकर बताया कि इस महल के मालिक से कह दो कि उन्हें देखने के लिए बग्दाद से एक अजनबी आया हुआ है।

यह खबर मिलते ही अबूअल कासिम मेहमान का स्वागत करने खुद बाहर आया, कोमल शब्दों में स्वागत किया, खलीफ़ा का हाथ पकड़कर उसे एक सुंदर कक्ष में ले गया। कमरे की चारों दीवारों से सटे जरीदार किनारेवाले रेशमी खोलवाले तकिये लगे थे। दोनों उन पर असीन हुए। तुरंत बारह गुलाम मानिक जड़े स्फटिक पात्रों में दाख की शराब ले आये। उनके पीछे बारह युवतियाँ चीनी मिट्टी के पात्रों में फल और फूल तथा सोने के पात्रों में शरबत ले आयीं। उन्हें पीने पर खलीफ़ा को लगा कि उसके महल में ऐसी चीज़ें कहाँ?

एक दूसरे कक्ष में खलीफ़ा को सोने की थालियों में खाना खिलाया गया। वे चीज़ें भी बड़ी स्वादिष्ट थीं। इसके बाद संगीत का आयोजन किया गया, उस संगीत को सुनते खलीफ़ा ने सोचा–"मेरे महल में भी अच्छे गायक हैं, संगीत के सभी रहस्य जाननेवाला इशाक है, किंतु इस साधारण व्यक्ति के घर की संगीत-सभा जैसी शायद स्वर्ग में भी न हो।"

खलीफ़ा संगीत सुनने में तन्मय था, तभी अबूअल कासिम उठकर चला गया, एक हाथ में चन्दन की छड़ी तथा दूसरे हाथ में एक पेड़ का चित्र ले आ पहुँचा। पेड़ के चित्र का तना चाँदी से तथा पत्ते मरकतों से तथा फल मानिकों से निर्मित थे। पेड़ के ऊपरी भाग में एक सोने के मोर का चित्र था। वह बड़ी कुशलता के साथ तैयार किया गया था। अबूअल कासिम ने उस चित्र को खलीफ़ा के सामने रखा और अबूअल ने चन्दन की लकड़ी से मारा। तुरंत मोर अपनी पूँछ और पंख फैलाये नाचने लगा। उसके घूमते समय उसके शरीर के रंध्रों से सुवास निकली और कमरे के चारों तरफ़ फैल गयी।

खलीफ़ा उन विचित्र वस्तुओं को देखते प्रसन्न था, तभी अबूअल कासिम झट उस चित्र को लेकर चला गया।

"यह भी कैसा आदमी है? कहीं मेहमानदारी ऐसी होती है? जफ़र की बातों में अतिशयोक्ति हो, पर यह तो मामूली मर्यादा तक नहीं जानता। शायद वह यह सोचकर उस मोर के चित्र को लेकर भाग गया कि कहीं मैं पूछ बैठूं? इसके बड़प्पन को देखने खुद आया, बड़ा अच्छा हुआ।" खलीफ़ा ने अपने मन में सोचा।

इतने में अबूअल कासिम एक सुन्दर गुलाम युवक को साथ ले फिर आ पहुँचा। वह मोतियों से जड़ी पोशाकें पहने हुए था। उसके हाथ में एक बर्तन था। वह एक ही मानिक से तैयार किया गया था। उस पात्र में शराब भरी थी। गुलाम ने खलीफ़ा को नमस्कार किया और वह पात्र उसके हाथ दिया। खलीफ़ा ने सारी शराब पी डाली तो देखता क्या है? उसमें फिर शराब भरी हुई है। उसे पुनः पी डाली और गुलाम युवक के हाथ देते हुए देखा, उसमें फिर शराब भरी थी।

वह अक्षय शराबवाला पात्र मोर के चित्र से भी खलीफ़ा को अद्‌भुत मालूम हुआ। खलीफ़ा ने अबूअल कासिम से पूछा–"इसका रहस्य क्या है?"

"इसमें वास्तव में कोई अद्‌भुत बात नहीं है। प्राचीनकाल के एक वैज्ञानिक ने इसे तैयार किया है।" इन शब्दों के साथ अबूअल कासिम उस गुलाम युवक को जल्दी-जल्दी खींचकर ले गया।

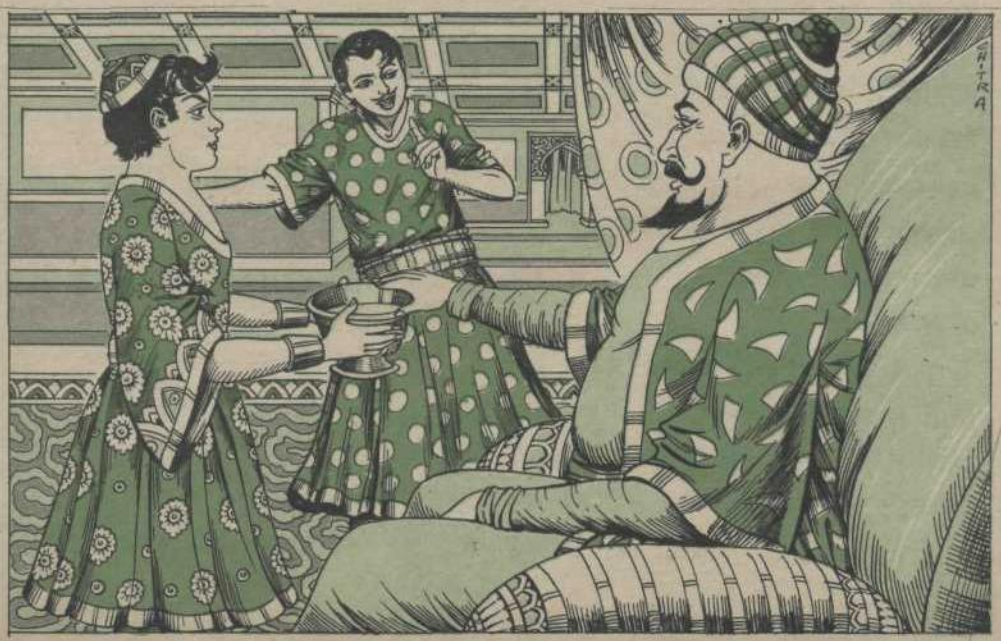

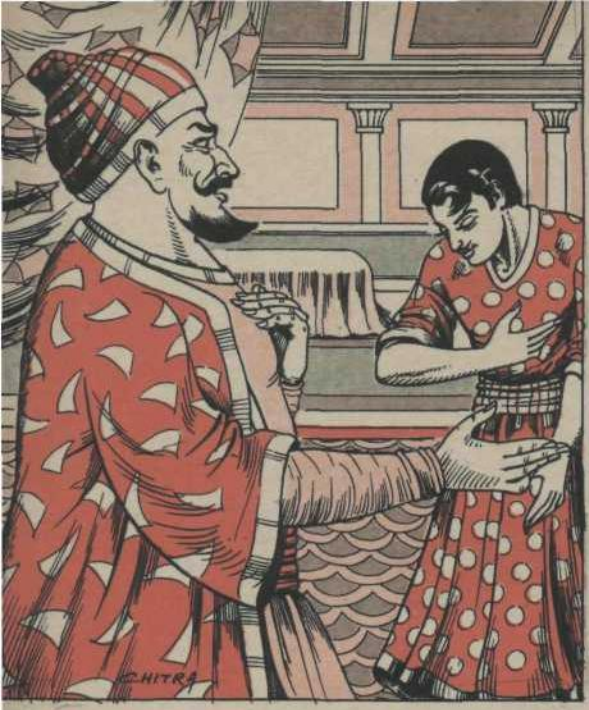

"छी: छी:! यह युवक एकदम मूर्ख है! यह साधारण शिष्टाचार तक नहीं जानता। मेरे बिना पूछे अद्‌भुत चीज़ें ला दिखाता है और उसमें अभिरुचि के पैदा होने पर खींचकर ले जाता है। यह तो एकदम दगा और नटखटपन है! जफ़र को समझाना है कि आइंदा वह जो कुछ कहे, सोच-समझकर कहे।" खलीफ़ा ने मन में सोचा।

इतने में अबूअल कासिम पुनः लौट आया। इस बार उसके साथ एक सुंदर युवती थी। उसका सौंदर्य देवता नारियों से बढ़कर था। उसके शरीर में रत्न भरे थे। मगर उसके अवयवों का सौंदर्य रत्न छिपाते न थे। वह सामने आकर बैठ गयी और वीणा बजाने लगी। खलीफ़ा उस आनंद में मोर का चित्र और मानिक पात्र को भी भूल गया। उसने युवक की ओर देखकर पूछा–"तुमको देखने पर ईर्ष्या पैदा होती है।"

खलीफ़ा के मुँह से ये शब्द निकल ही रहे थे कि अबूअल कासिम उस युवती का हाथ पकड़कर उसे खींचकर ले गया।

इस बार खलीफ़ा का क्रोध और भड़क उठा। इसलिए जब अबूअल कासिम फिर लौटा, तब उसने कहा–"महाशय, तुमने एक अजनबी की जो मेहमाननवाजी की, उस पर मैं मुग्ध हो गया हूँ। अब मुझे आज्ञा दीजिये तो मैं चला जाऊँगा। मैंने आप से बहुत कुछ पायी है।" इन शब्दों के साथ खलीफ़ा उठ खड़ा हुआ।

अतिथि की इच्छा के विरुद्ध कुछ न कहने के ख्याल से अबूअल कासिम ने सर झुकाकर स्वीकृति दी और फाटक तक उसे विदा दे पूछा–"मेरे आतिथ्य में कोई त्रुटि हो तो क्षमा करे।"

खलीफ़ा ने सराय में लौटते हुए सोचा कि कासिम बड़ा ही घमण्डी है। मूर्ख है। वह नये लोगों के सामने अपनी संपत्ति और ऐश्वर्य का प्रदर्शन करके तृप्त होता है। यह तो दानशीलता कभी नहीं हो

सकती। यह लोभी ही नहीं बल्कि लोभियों का दादा है। जफ़र झूठ बोला। उसे जल्दी इसकी सज़ा मिल जायगी।

इसी गुस्से में खलीफ़ा सराय को लौटा, देखता क्या है, सराय के अहाते में अर्धवृत्त में गुलाम युवतियाँ खड़ी हुई हैं। उनमें आधी तो गोरी गुलाम युवतियाँ थीं और बाक़ी काली। उनके बीच कासिम के घर वीणा बजानेवाली युवती खड़ी थी। उसके दायीं ओर मानिक पात्र लानेवाला गुलाम युवक खड़ा था। उसके दायीं तरफ़ खड़े एक और युवक के हाथ में मोर और पेड़वाला चित्र था।

खलीफ़ा के सराय के अहाते में पहुँचते ही सब गुलामों ने साष्टांग दण्डवत किया। गुलाम युवती ने आगे बढ़कर खलीफ़ा के हाथ एक खत दिया। उसमें यों लिखा था–

"मेरे घर आकर इसे पवित्र बनानेवाले अतिथि वर को शांति और सुख प्राप्त हो! आपसे यह प्रार्थना है कि इन तुच्छ उपहारों को स्वीकार करें। ये सब गुलाम, पेड़, मोर, माणिक पात्र इत्यादि ने आपको आकृष्ट करते हमने देखा, इसलिए आपको इन्हें भेंट देने की हिम्मत की। हर चीज़ अल्लाह से मिलती है, और अल्लाह के पास लौट जाती है।"

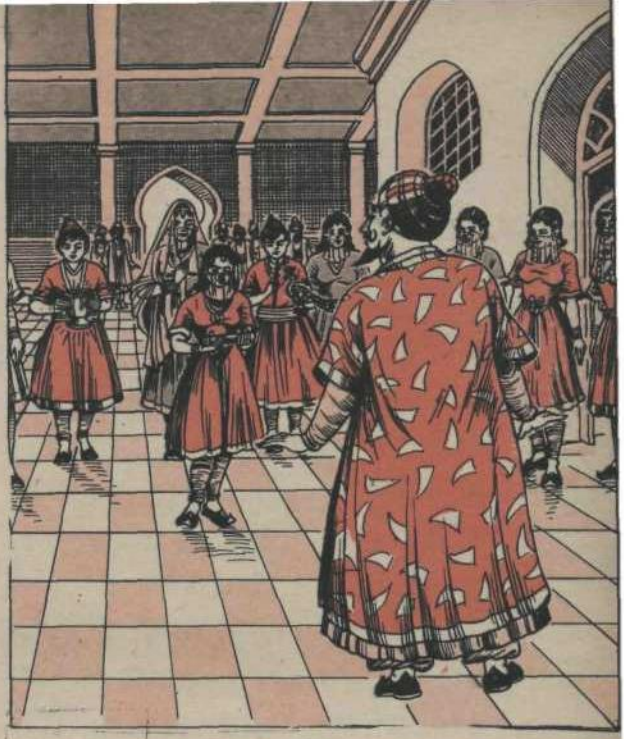

उस खत को पढ़ने के बाद खलीफ़ा को बड़ा पछतावा हुआ। खलीफ़ा ने अपने मन में सोचा–"मैंने इस युवक को कैसा गलत समझा! हे खलीफ़ा! तुम्हारा वह विशाल हृदय क्या हो गया? हे मेरे विश्वासपात्र जफ़र, अल्लाह की मेहर्बानी तुमको प्राप्त हो! मेरे अहंकार और घमण्ड को तुमने अच्छा सबक़ सिखाया। यह मामूली युवक है। इसने राजा-महाराजाओं के देने से संकोच कर सकनेवाले उपहार बात की बात में मुझे दे डाले। क्या यह सचमुच मामूली नागरिक है? मामूली नागरिक हो तो इसे यह सारी संपत्ति कहाँ से मिली? चाहे इसका रहस्य पूछना

मर्यादा के विरुद्ध हो, फिर भी मुझे यह रहस्य जानना होगा!"

यह सोचकर खलीफ़ा ने उन उपहारों को सराय में रखा और अबूअल कासिम के घर जाकर पूछा–"महाशय, अल्लाह की मेहर्बानी तुम पर बराबर बनी रहे! तुमने जो अमूल्य उपहार भेजें, उन्हें स्वीकार करने में मुझे संकोच होता है। मुझे लगता है कि अतिथि के रूप में उन्हें स्वीकार करना अतिथि की मर्यादा का उल्लंघन करने के समान है। उन्हें पुनः वापस लेने की स्वीकृति दे तो मैं तुमसे विदा लूंगा और बग्दाद लौटकर तुम्हारी दानशीलता की सब जगह तारीफ़ करूँगा।"

ये बातें सुनकर अबूअल कासिम दीनतापूर्वक बोला–"महाशय, मैंने आपको जो आतिथ्य दिया और तुच्छ उपहार दिये, उनसे शायद आप असंतुष्ट हैं; वरना आप सराय से लौटकर मेरा इस तरह अपमान नहीं करते।"

खलीफ़ा ने झट कह दिया–"ऐसा मत सोचो, भाई! अल्लाह की मेहर्बानी से मैं कभी आतिथ्य देनेवालों का अपमान नहीं करता। एक अजनबी को ऐसे अमूल्य भेंटकर तुम गरीब हो जाओगे, इस डर से वापस करने लौट आया। तुम्हारे पास चाहे जितनी भी संपत्ति क्यों न हो, उसकी सीमा होती है न?"

"आपके लौट आने का अगर यही कारण हो तो आपको चिंता करने की ज़रूरत नहीं; क्योंकि मैं रोज़ अपने घर आनेवाले मेहमानों को इसी तरह के उपहार देकर अल्लाह का ऋण चुकाता रहता हूँ। अल्लाह ने मुझे ऐसी अक्षय संपत्ति दी जो कभी घटती ही नहीं। यदि मेरी बात पर आपको विश्वास पैदा करना है तो मुझे अपनी कहानी सुनानी पडेगी। वास्तव में वह एक विचित्र कहानी है।" अबूअल कासिम ने समझाया।

(अगले अंक में समाप्त)

विचित्र युवक

एक गाँव में विमलदास नामक एक अमीर था। उसके जो भी संतान होती, वह मर जाती। इसलिए वह दुःख में डूब गया। उसने संतान के वास्ते जप, उपवास और व्रत भी कराया। वह अधेड़ उम्र का भी हो गया। आख़िर वह काशी की यात्रा करने के विचार से अपनी पत्नी के साथ चल पड़ा।

रास्ते में एक गाँव पड़ा जिसमें विमल दास अपने मित्र गोकुलदास के घर ठहरा। गोकुलदास के भी कोई संतान न थी। वह भी काशी की यात्रा पर जाना चाहता था, मगर तुरंत निकल पड़ना उसके लिए संभव न था। इसलिए उसने मेहनत करके जो सौ रुपये इकट्ठा किये थे, वे विमल दास के हाथ देकर कहा—"तुम काशी में मेरे नाम से पूजा व अर्चना करवा कर भगवान से निवेदन करो कि मुझे भी संतान हो जाय। भगवान तो जानते हैं कि इस वक़्त मेरी हालत यात्रा करने योग्य नहीं है। मेरे भाग्य में हो तो भगवान का अनुग्रह मुझे प्राप्त होगा।"

विमल दास ने गोकुल दास के कहे मुताबिक़ काशी में उसके नाम पर पूजा व अर्चना करायी, जैसे उसने करवायी। संतान के वास्ते उसने गोकुल दास की तरफ़ से भी प्रार्थना की।

विमल दास को काशी में मालूम हुआ कि वहाँ पर एक योगी है, जिसके प्रसाद देने पर लोगों की अच्छी कामनाओं की पूर्ति हो जाती है। उसने उस योगी के दर्शन करके अपनी और गोकुल दास की तरफ़ से उसके चरणों की पूजा की और अपनी तथा मित्र की इच्छा योगी से बतायी।

योगी ने विमल दास के हाथ भभूत देकर कहा—"इसमें से आधा तुम अपनी

केशवप्रसाद वर्मा

पत्नी को दो और आधा अपने मित्र की औरत को दो। इसके सेवन से दोनों को संतान प्राप्त होगी।" विमल दास की पत्नी ने आधा भभूत उसी समय सेवन किया। बाक़ी आधा घर लाकर विमलदास ने गोकुल दास की पत्नी को दिया।

विमल दास की पत्नी गर्भवती हुई और समय पर उसने एक पुत्र का जन्म दिया। गोकुल दास की पत्नी भी गर्भवती हुई और विमल दास के बच्चे पैदा होने के दो महीने बाद उसने भी एक बच्चे का जन्म दिया। विमल दास ने अपने लड़के का नाम विश्वनाथ रखा तो गोकुल दास ने अपने पुत्र का नाम काशीनाथ।

गोकुलदास का लड़का काशीनाथ ज्यों ज्यों बड़ा होता गया, त्यों त्यों वह विचित्र स्वभाव का बनता गया। वह एक खास तरह के कपड़े चाहता, माँ जो कुछ बनाती, वह न खाता, बल्कि कहता कि मुझे अमुक चीज़ बनाकर खिलाओ। बच्चों के साथ भी खेलते समय उस खेल को छोड़ वह एक दूसरा ही खेल खेलता। मगर जब पांचवें साल में उसका अक्षराभ्यास हुआ तब वह हर पाठ बड़ी आसानी से सीखने लगा।

एक दिन गोकुलदास विमलदास के घर आया। उसने देखा कि विमलदास का लड़का विश्वनाथ भी अपने पुत्र के समान वे ही चीज़ें मांगता है। वैसे ही खेल खेलता है तो उसे आश्चर्य हुआ। उसने सोचा कि यह सब योगी के प्रसाद की महिमा है।

यह बात सच भी थी। विश्वनाथ के मन में जो विचार पैदा होता, वही काशीनाथ के मन में भी पैदा होता। विश्वनाथ जो काम करता, वही काम काशीनाथ भी करता। विश्वनाथ जो पाठ सीख लेता, वे पाठ बिना सीखे काशीनाथ समझ लेता। यह विचित्र बात सब पर प्रकट हो गयी। इसलिए सब लोग उन्हें 'विचित्र लड़के' कहकर पुकारने लगे। दोनों लड़कों के रूपों में अंतर

ज़रूर था, मगर उनके कार्यों में और विचारों में समानता थी।

एक जो काम करता, दूसरा भी वही काम करता। एक खाने बैठता तो दूसरा भी वही काम करता। अलग-अलग गाँवों में रहते हुए भी वे एक दूसरे का अनुकरण किया करते। मगर दोनों के बीच मैत्री न थी। कभी संयोग से दोनों की मुलाक़ात होती तो एक दूसरे को देख मुस्कुरा पड़ते। अगर कोई यह पूछता कि "तुम क्यों हँस पड़े?" तो दूसरा यही जवाब देता–"तुम क्यों हँस पड़े?" इसके बाद दोनों अपने अपने रास्ते चले जाते।

दोनों धीरे-धीरे बड़े हो गये। कुछ समय बाद दोनों के पिता भी मर गये।

विश्वनाथ जब शादी के योग्य हो गया, तब उसे अनेक संबंध आने लगे। उसने कई कन्याओं को देखा, और अंत में विशालाक्षी नामक कन्या को निश्चय किया। विशालाक्षी के पिता भीमेश्वर ने मुहूर्त भी निर्णय किया।

इसके दूसरे दिन काशीनाथ भीमेश्वर के घर गया और पूछा–"आप अपनी बेटी विशालाक्षी का मेरे साथ विवाह कीजिये।"

"कल ही मैंने अपनी पुत्री का विवाह विश्वनाथ के साथ निर्णय कर लिया है, अब तुम्हारे साथ कैसे करूँ?" भीमेश्वर ने उत्तर दिया।

"अभी तो तांबूल नहीं बांटा है न?" काशीनाथ ने कहा।

भीमेस्वर ने विश्वनाथ को समझा कर भेज दिया कि मैं काशीनाथ से बात कर अपना निर्णय सुनाऊँगा। भीमेश्वर काशीनाथ के घर गया। उसका उद्देश्य था कि उसकी लड़की के साथ विवाह करने में विश्वनाथ और काशीनाथ होड़ लगावे तो कन्या-शुल्क जो ज्यादा देगा, उसके साथ अपनी बेटी का विवाह करे।

उसने विश्वनाथ से कहा–"काशीनाथ मेरी कन्या के लिए जितना भी शुल्क मागूं देने को तैयार है। मैं सोचता हूँ कि उसी के साथ विवाह करूँ तो अच्छा होगा। क्योंकि वह हठ करता है, मैं इनकार कर बैठूं तो वह कोई न कोई बखेड़ा खड़ा न कर दे, यही मेरा डर है।"

"तब तो मैं देखते बैठा रहूँ। मुझ से यह बात कहने में तुमको संकोच नहीं होता? मैं भी देखूंगा कि तुम अपनी कन्या का विवाह काशीनाथ के साथ कैसे करोगे?" विश्वनाथ ने अपना क्रोध प्रकट किया।

विश्वनाथ ने काशीनाथ को मार डालने का निश्चय किया। वह उस रात को एक लोहे की छड़ी लेकर काशीनाथ के घर गया और एक दीवार की आड़ में ताक में बैठा रहा। वह रात भर जागता रहा, मगर काशीनाथ के घर से कोई बाहर न आया।

कारण यह था कि विश्वनाथ के मन में जो विचार आया, वही विचार काशीनाथ के मन में भी पैदा हुआ। वह भी एक लोहे की छड़ी ले जाकर रात भर विश्वनाथ के घर की दीवार की आड़ में बैठा रहा।

सवेरे दोनों अपने अपने घर लौटते हुए रास्ते में मिले। दोनों में बात बढ़ गयी; एक ने पूछा कि तुम रात को कहाँ गये थे? दूसरे ने भी यही सवाल किया– आखिर दोनों ने यही धमकी दी कि मैं जिस कन्या के साथ विवाह करना चाहता हूँ, उस कन्या के साथ तुम कैसे करोगे?

उनके झगड़ते देख लोगों की भीड़ लग गयी। उन दोनों को पहचानने वाले एक बुजुर्ग ने उन्हें समझाया–"नाहक़, तुम दोनों क्यों झगड़ते हो? कन्यादान करने वाला तो भीमेश्वर है! उसी के घर जाकर फ़ैसला कर लेंगे।"

वह बुजुर्ग दोनों को भीमेश्वर के घर ले गया। भीतर जाकर उससे बात की, तब बाहर चला आया।

इसके बाद भीमेश्वर ने उन युवकों के पास आकर कहा–"यह निर्णय मैं अपनी कन्या पर छोड़ देता हूँ। कल तुम दोनों मेरे घर आ जाओ। दस बुजुर्गों को भी बुलाऊँगा। उनके समक्ष विशालाक्षी जिसको चुनेगी, उसी के साथ विवाह करूँगा।"

दूसरे दिन जब विश्वनाथ और काशीनाथ भीमेश्वर के घर पहुँचे तब वहाँ पर कई बुजुर्ग पहले ही पहुंच चुके थे।

भीमेश्वर ने उन युवकों से कहा–"तुम दोनों एक ही जगह रहे तो मेरी कन्या एक को छोड़ दूसरे के कंठ में माला कैसे पहना सकती है? वह लजायगी।" यह कहकर उसने विश्वनाथ और काशीनाथ को अलग-अलग कमरों में बिठाया।

इसके थोड़ी देर बाद विश्वनाथ हँसते हुए कमरे से बाहर आया। उसके कंठ में माला थी। उसके पीछे विशालाक्षी भी आ पहुँची। उसी समय दूसरे कमरे से काशीनाथ आया। उसके गले में भी माला पड़ी थी। दोनों कन्याएँ एक समान थीं।

वहाँ पर उपस्थित बुजुर्ग इस दृश्य को देख आश्चर्य में आ गये।

"आप लोग आश्चर्य न कीजियेगा। ये दोनों विशालाक्षियाँ ही हैं। एक बड़ी विशालाक्षी और दूसरी छोटी विशालाक्षी। ये दोनों जुड़वीं कन्याएँ हैं।" भीमेश्वर ने समझाया।

इस तरह विश्वनाथ और काशीनाथ की समस्या हल हो गयी। वे दोनों अपने पसंद की कन्याओं के साथ विवाह करके सुख से रहने लगे।

चालाकी

एक किसान को एक मज़दूर की ज़रूरत आ पड़ी। सोम नामक व्यक्ति ने किसान से कहा कि अगर उसे तीन जून भर पेट खाना खिलाये तो मज़दूरी लिए बिना काम करेगा।

किसान ने खुशी से मान लिया और दूसरे दिन उसे काम पर लगा दिया।

दूसरे दिन सवेरे सोम किसान के घर आकर खाने बैठ गया। किसान की पत्नी ने उसे खाना दिया। सोम ने दो आदमी के बराबर का खाना खाया। किसान की पत्नी अचरज में आ गयी और उसने यह बात अपने पति को सुनायी। किसान ने अपनी पत्नी को सलाह दी कि दुपहर का खाना भी इसी जून खाने के लिए मज़दूर से कह दो। किसान की पत्नी के कहे अनुसार सोम दुपहर का खाना भी उसी जून खाने को मान गया और फिर एक आदमी का खाना खा लिया।

किसान ने घबराकर कहा–"सुनो सोम! हम दोनों आज शाम को एक दूसरे गाँव जा रहे हैं, इसलिए तुम रात का खाना भी अभी खा लो।"

सोम ने मान लिया और फिर एक आदमी का खाना खा डाला।

"अच्छा, अब तुम जाकर खेत में काम करो।" किसान ने कहा।

"अजी, रात का खाना खाने के बाद काम कौन करेगा?" ये शब्द कहते सोम पैर पसारकर वहीं पर लेट गया।

गोविन्द सहाय

विष्णु की माया

प्राचीनकाल में नारदमुनि ने हिमालय पहाड़ पर मानससरोवर के निकट एक कुटीर बनाया और तपस्या शुरू की। इन्द्र यह सोचकर डर गया कि नारद जो घोर तपस्या कर रहा है जिसके कारण उसके पद के लिए खतरा पैदा होनेवाला है। नारद की तपस्या का भंग करने के लिए इन्द्र ने रंभा इत्यादि अप्सराओं को भेजा। वे नारद की तपस्या भंग न कर पायीं, बल्कि लज्जित होकर लौट गयीं।

कई वर्षों तक तपस्या करने के बाद नारद को लगा कि उसकी तपस्या सफल हो गयी है। उसने ब्रह्मा के पास जाकर बताया कि मेरी तपस्या सफल हो गयी है, तब पार्वती और परमेश्वर के पास गया और बोला–"मेरी तपस्या सफल हो गयी है, इसलिए शिव की माया मेरा कुछ बिगाड़ नहीं सकती।"

इस पर शिवजी ने नारद को चेतावनी देते हुए समझाया–"तुम ऐसा न कहो, मैं ही खुद शिवजी की माया को समझ न पाया, इसलिए तुम सावधान रहो।"

नारद ने शिवजी की चेतावनी की परवाह न की, वैकुण्ठ जाकर बोला–"हे लक्ष्मी और जनार्दन! आपकी कृपा से इंद्रियों पर विजय पाकर मैंने सिद्धि पा ली है। आगे शिव की माया या विष्णु की माया भी मेरा स्पर्श नहीं कर सकती।"

नारद की बातें सुनकर विष्णु ने समझाया–"नारद, माया प्रकृति में जन्म लेकर शिव और केशव का आश्रय ले घूमा करती है। उस पर विजय पाना किसी के लिए भी संभव नहीं है। थोड़ा सावधान रहना अच्छा है।"

नारद जनार्दन से विदा लेकर लोकों का संचार करते हुए कल्याणदुर्ग नामक

नगर में पहुँचा। तब उसने यह ढिंढ़ोरा सुना–"कल राजकुमारी रमालक्ष्मी का स्वयंवर होनेवाला है। सब लोग उसमें उपस्थित होकर उत्सव को देख सकते हैं।"

यह ढिंढोरा सुनते ही नारद सीधे राजमहल को गया और राजा से पूछा–"राजन, आपका नगर अलंकृत किया गया है, सब जगह कोलहाल है। क्या बात है?"

राजा ने तुरंत परिचारिकाओं को भेजकर अपनी पुत्री को बुला भेजा। उसके द्वारा नारद को प्रणाम करवाया। तब बोला–"मुनिवर, यह कन्या मेरी पुत्री रमालक्ष्मी है। कल हम इसका स्वयंवर मनाने जा रहे हैं। यह कहती है कि स्वयंवर में महाविष्णु को वरण करेगी।" राजकुमारी को देखते ही नारद को माया ने घेर लिया। वह रमालक्ष्मी पर मोहित हुआ और राजा से बोला–"राजन, आप अपनी पुत्री का विवाह मेरे साथ कीजिये, इससे आपका वंश तर जायगा और मैं भी प्रसन्न हो जाऊँगा।"

"मुनिवर, आपका कहना असत्य नहीं है। मगर स्वयंवर में कन्या की इच्छा सबसे प्रधान है। वह जिसको वरेगी, उसके साथ विवाह करना मेरा कर्तव्य है। कल आप भी स्वयंवर में उपस्थित हो जाइये, देखिये, शायद वह आपको ही वरण करे।" राजा ने विनयपूर्वक कहा।

"ज़रूर आऊँगा।" नारद ने कहा। इसके बाद वह राजा से विदा लेकर सीधे वैकुण्ठ गया और बोला–"जनार्दन, मेरे तो न कोई घर-द्वार है, न मेरी गृहस्थी! मैं यूँ ही निरुद्देश्य घूमा करता हूँ। आपका अनुग्रह प्राप्त हो तो मैं भी विवाह करके स्थिररूप से सुखपूर्वक जीवन बिताऊँगा। मेरी इच्छा की पूर्ति कीजिये।"

"अरे, तुम अपनी इच्छा ही न बताओगे तो मैं उसकी पूर्ति कैसे कर सकता हूँ?" जनार्दन ने कहा।

"कल कल्याणपुर में राजकुमारी का स्वयंवर होनेवाला है। सुनते हैं कि वह

विष्णु के साथ ही विवाह करना चाहती है। आप मुझे अपना रूप प्रदान कीजिये। मैं उस रूप को लेकर स्वयंवर में जाऊँगा। राजकुमारी अवश्य मुझे वर लेगी।" नारद ने पूछा।

"नारद, तुम शिव की माया में पड़ गये हो। तुम अपनी इस इच्छा को छोड़ दोगे तभी तुम्हारा भला होगा।" जनार्दन ने समझाया। नारद को क्रोध आया और बोला–"शिव या विष्णु की माया भी मेरा कुछ बिगाड़ नहीं सकती। मैंने आपसे आज तक कुछ नहीं माँगा। आज एक वर माँगा तो उपदेश दे रहे हैं।"

"नारद, ऐसी बात नहीं है। मैं तुम्हारी इच्छा की पूर्ति करूँगा। तुमको मैं अपना रूप देता हूँ। तुम स्वयंवर में जाओ।" जनार्दन ने नारद से कहा।

नारद ने परमानंदित हो अपने शरीर को देखा। वह साक्षात् विष्णु के रूप में था। उसे देख मन ही मन प्रसन्न होते हुए नारद स्वयंवर के मण्डप में गया। वहाँ पर पहले से ही अनेक राजा और राजकुमार उपस्थित थे। नारद जाकर राजकुमारों के बीच एक आसन पर बैठ गया। नारद यह सोचकर व्यग्र होने लगा कि कब मुहूर्त का समय निकट आयगा और कब राजकुमारी उसे वर लेगी।

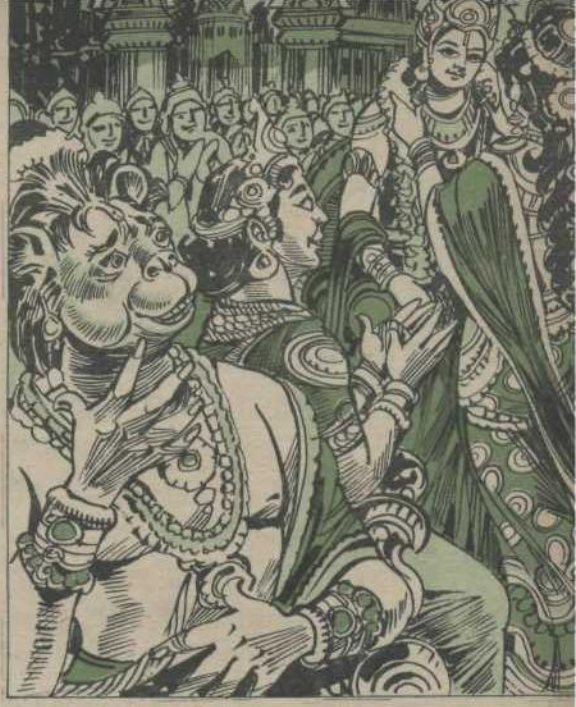

इतने में मुहूर्त का समय निकट आया। परिचारिकाओं ने सभा में प्रवेश करके घोषणा की कि राजकुमारी रमालक्ष्मी प्रवेश कर रही है। उसके तुरंत बाद रमालक्ष्मी एक पालकी में आयी। उसका पिता आकर राजकुमारी की बगल में खड़ा हुआ और निवेदन किया–"महानुभावो, यह कन्या मेरी पुत्री है। इसका नाम रमालक्ष्मी है। यहाँ पर उपस्थित लोगों में से जिसके कंठ में यह वरमाला डालेगी, मैं उसके साथ इस कन्या का विवाह करूँगा।"

पुरोहित ने मंत्रोच्चारण करते रमालक्ष्मी के हाथ में एक फूलमाला दी और कहा–

"राजकुमारी, तुमको जो वर पसंद आयगा, उसके कंठ में यह माला पहना दो।" परिचारिकायें एक एक राजकुमार का परिचय, वंश और उसका वृत्तांत बताती गयीं। राजकुमारी जब सभा के बीच आयी तब उसे जनार्दन दिखाई दिया। राजकुमारी ने अपने हाथ की माला जनार्दन के कंठ में पहना दी। दूसरे ही क्षण जनार्दन रमालक्ष्मी को अपने गरुड़वाहन पर वैकुण्ठ ले गया। यह घटना हठात् बिजली की भांति एक पल में हो गयी। इस घटना पर सभासद सब चकित रह गये। नारद यह सोचकर राजकुमारी को चारों तरफ़ ढूंढ़ने लगा, तभी सब लोग उसके इस व्यवहार पर हँस पड़े। नारद ने आश्चर्य में आकर सभासदों से पूछा–"राजकुमारी कहाँ? उसने किसको वर लिया है? आप सब मेरी ओर देख क्यों हँस रहे हैं?"

इस पर सभासदों ने उत्तर दिया–"तुम कौन हो? तुम्हारा रूप देखने में विष्णु जैसा है। मगर तुम्हारा चेहरा बंदर और भालू जैसा है! स्वयंवर समाप्त हो गया है। राजकुमारी जनार्दन को वरकर उनके साथ वैकुण्ठ चली गयी है।"

नारद क्रोध में आकर वैकुण्ठ चला गया और शाप दिया–"आप ने मुझे धोखा दिया। इसलिए मैं जैसे पत्नी के वास्ते तड़प रहा हूँ वैसे आप भी तड़पेंगे। मेरे चेहरे को बंदर और भालू जैसा बनाया, इसलिए आप भी उन बंदरों और भालुओं के आश्रय में जायेंगे।"

"नारद, मैंने तुमको धोखा नहीं दिया। तुम शिव की माया में फँसकर धोखा खा चुके हो! तुम्हारा शाप बेकार न हो, इसलिए मैं उस शाप का फल भोग लूंगा। मुझे शाप देने के कारण तुमको पछताने की ज़रूरत नहीं।" जनार्दन ने समझाया।

नारद ने जनार्दन के पैरों पर गिरकर क्षमा माँग ली। इसके बाद जनार्दन का आशीर्वाद पाया। देव की निंदा करने के कारण प्रायश्चित्त के रूप में तीर्थयात्रायें करते चला गया।

पंचकल्याणी

[२]

श्यामल नगर के राजा के सवाल का जवाब वीरदास ने यों दिया–

यह घटना मेरे बचपन में बीती है। मेरे पिताजी के पास कई एकड़ जमीन थी और गायों की रेवड़ भी थी। हमारे घर में खाने-पीने की कमी न थी।

एक दिन दूर के हमारे खेत में एक गाय ने बछड़ा दिया। मेरे पिताजी ने उस गाय और बछड़े को घर लाने मुझे भेज दिया। मैं वहाँ गया। बछड़े को उठाकर निकल पड़ा तो गाय भी मेरे पीछे चलने लगी।

मैं थोड़ी ही दूर चला था कि ज़ोर की वर्षा हुई। वर्षा के रुकने तक मुझे कहीं ठहरना पड़ा। मुझे थोड़ी ही दूर पर एक झोंपड़ी दिखायी दी तो मैं गाय और बछड़े के साथ उस झोंपड़ी के भीतर चला गया।

एक घंटे बाद उस झोंपड़ी में बारह बिल्लियाँ आयीं। उनमें एक बिल्ली बाक़ी बिल्लियों से काफी बड़ी थी। वह अन्य बिल्लियों की ओर देख चिल्लाने लगी। बाक़ी बिल्लियाँ भी उसकी देखा देखी एक साथ चिल्ला पड़ीं। उनकी चिल्लाहट बड़ी भयंकर थी। देखते-देखते वे सब अचानक बछड़े पर कूद पड़ीं और मेरी आँखों के सामने उसे खा डाला।

उन्हें देखने पर मुझे क्रोध आया। लेकिन मैं डर गया। उनको भगाना चाहा, मगर मेरे लिए संभव न था। उन बिल्लियों ने मेरी चिल्लाहटों की कोई परवाह न की।

इसके बाद फिर उन सब बिल्लियों ने ज़ोर से चिल्लाना शुरू किया। मुझे लगा कि उनकी भूख अभी नहीं मिटी है।

रमणलाल

इस बार वे बिल्लियाँ गाय पर हमला कर बैठीं और देखते-देखते उसे भी खा डाला। मेरा डर और बढ़ गया।

फिर तीसरी बार जब बिल्लियों ने चिल्लाना शुरू किया, तब मैंने सोचा कि अब मेरी बारी है। इसलिए मैं घबरा कर एक दम भाग खड़ा हुआ। वे राक्षसी बिल्लियाँ मेरा पीछा करने लगीं।

फिर भी मैं बचकर भाग गया और एक घने व ऊँचे पेड़ पर जा बैठा। उसकी डालों में इस तरह छिप कर बैठ गया कि वे मुझे देख न ले।

बिल्लियाँ मुझे न पाकर पेड़ों के बीच चक्कर काटने लगीं। मैंने सोचा कि अब ऊब कर वे चली जायेंगी। मगर बड़ी बिल्ली मैं जिस पेड़ पर था, उसके नीचे आ पहुँची। सर उठाकर उसने देखा। मेरी गंध लेकर वह वहीं पर बैठ गयी। जल्द ही बाक़ी बिल्लियाँ भी वहाँ आ पहुँचीं।

उनमें से एक बिल्ली पेड़ पर चढ़ने लगी। जब वह मेरे निकट पहुँची तब मैंने चाकू निकाल कर उसके पेट में घुसेड़ दिया। वह मर गयी और नीचे बैठी उन बिल्लयों पर जा गिरी।

इससे बाक़ी बिल्लियाँ एक दम नाराज़ हो गयीं। बड़ी बिल्ली ने छोटी बिल्लियों से कुछ कहा। झट सब मिलकर उस पेड़ की बड़ी जड़ को उखाड़ने के लिए अपने पैरों से खुरेदने लगीं। जल्द ही एक जड़ कट गयी और पेड़ थोड़ा झुक गया।

में डर गया और ज़ोर से चिल्ला पड़ा। पेड़ तो झुक गया, पर गिरा नहीं। बिल्लियों ने एक दूसरी बड़ी जड़ को तोड़ना शुरू किया।

वह भी टूट गयी जिससे पेड़ और झुक गया। मैं जान के डर से चिल्ला पड़ा।

बिल्लियों ने तीसरी जड़ को तोड़ना प्रारंभ किया। तीसरी जड़ के टूटते ही पेड़ झुक कर नीचे गिर पड़ा।

मैं जान के डर से पेड़ की डाल को ज़ोर से पकड़ा रहा और बिल्लियों का आहार बनने के लिए तैयार हो गया।

मगर मेरी चिल्लाहटें बेकार न गयीं। दूर पर खेतों में काम करने वाले किसान और मजदूरों ने मेरी चिल्लाहटें सुनीं और कुदाल, लाठी आदि लेकर चारों ओर से दौड़ कर आ पहुँचे।

उन्हें देखते ही बिल्लियाँ भाग गयीं। मगर किसानों ने उनको घेर लिया और चुन चुन कर सबको मार डाला।

बीरदास ने यह घटना सुनाकर कहा– "महाराज, आपने हमको अपराधी ठहरा कर इंन्साफ़ किया और हमें फांसी पर चढ़ाने का निर्णय किया, फांसी पर लटकाने से हम बिना किसी प्रकार की तकलीफ़ें के अपने प्राण त्याग सकते हैं, मगर इससे भी उन राक्षसी बिल्लियों का हमें नोच-नोचकर खा जाना भयंकर घटना नहीं तो क्या है?"

"तुम ठीक कहते हो! तुम्हारी कहानी बड़ी अच्छी है। इसी तरह की तुम अपनी ज़िंदगी में बीती कोई और घटना सुनाओगे तो तुम्हारे एक और बेटे को माफ़ करूँगा और उसे मुक्त करूँगा।" राजा ने कहा।

बीरदास ने ज़रा सोच कर कहा– "महाराज! ऐसी घटना एक और है!"

"तो सुनाओ!" श्यामल देश के राजा ने कहा।

(अगले अंक में एक और कहानी)

चिरायु

भार्गव नामक एक ज्योतिषी के बहुत समय बाद एक लड़का हुआ। भार्गव ने अपने लड़के की जन्म-कुण्डली देख कर जान लिया कि उसकी उम्र केवल पच्चीस साल की है। इस पर भार्गव को बड़ा दुख हुआ। भार्गव ने अपने लड़के का नाम चिरायु रखा और उसकी जन्म-कुण्डली पर बड़ा गौर रखता गया। भार्गव को लगा कि जन्म-कुण्डली के मुताबिक़ चिरायु को जहाँ प्राण का संकट है, वहीं उसके विवाह का भी योग है। उसने सोचा कि शायद चिरायु का विवाह किया जाय तो वधू के ग्रह-बल से चिरायु की आयु में वृद्धि हो।

चिरायु आखिर बड़ा हो गया। वह देखने में सुन्दर और बुद्धिमान भी था। भार्गव चिरायु के विवाह का प्रयत्न करने लगा। भार्गव स्वभाव से भोला था, इसलिए वह सब लोगों से यही कहा करता था—"मेरे बेटे की आयु पच्चीस साल की है, और उसके विवाह का भी योग है। इसलिए उसकी पत्नी के ग्रह-बल से शायद उसका हित हो।" यह बात मालूम होने पर कोई चिरायु को अपनी लड़की देने तैयार न होता था।

धीरे धीरे चिरायु को भी अपनी जन्मकुण्डली का समाचार मालूम हुआ। उसने अपने पिता से कहा—"अगर मेरी आयु पच्चीस साल की हो तो विवाह ही क्यों करूँ? मैं अपना शेष जीवन काशी के विश्वेश्वर की सेवा में बिता दूंगा।" यह कहकर चिरायु जाने को हुआ, फिर अपने पिता को देख बोला—"पिताजी, यदि मैं अपने पच्चीस साल की उम्र में न मरा तो छब्बीसवें साल में घर लौट आऊँगा।"

सोमनाथ गुप्त

चिरायु काशी जा रहा था तो रास्ते में एक दिन की शाम को जंगल में यात्रियों का एक दल उसे दिखायी दिया। कोई राजा समीप के दूसरे देश की राजकुमारी का विवाह अपने पुत्र के साथ करने के लिए जा रहा था। रास्ते में उनका दल ठहरा था।

चिरायु ने राजा के सेवकों से पूछा—"क्या आज रात को तुम लोग मुझे अपने साथ रहने दोगे?" सेवक चिरायु को राजा के सामने ले गये और राजा को उसकी इच्छा बतायी।

राजा चिरायु को एड़ी से चोटी तक देखकर एक निर्णय पर पहुँचा। विवाह के लिए जिस राजकुमार को राजा ले जा रहा था, उसे मिरगी का रोग था। चिरायु लगभग राजकुमार के जैसा ही था। राजा इस चिंता से परेशान था कि ठीक विवाह के समय राजकुमार मिरगी के रोग का शिकार हो जाय तो क्या होगा! अब राजा के मन में यह विचार आया कि राजकुमार की जगह विवाह के होने तक चिरायु को वर बनाया जाय और विवाह के खतम होते ही उसे अपने रास्ते भिजवा दिया जाय तो वह इस झंझट से मुक्त हो जायगा। यह विचार कर राजा ने चिरायु से कहा—"तुम मेरे कहे मुताबिक़ करो, हम जैसे कहे, वैसे करते जाओ।

जब हम तुमको चले जाने को कहे, तब चले जाओ। इसे तुम मान जाओगे तो हम आज रात को हमारे शिबिर में तुम्हारे ठहरने का ही प्रबंध नहीं करेंगे, बल्कि एक हज़ार सिक्के पुरस्कार भी देंगे।"

पुरस्कार पाने की चिंता तो चिरायु के मन में न थी, मगर उस रात को ठहर जाने की जगह मिल जायगी, इस ख्याल से चिरायु ने राजा की बात मान ली। उस रात को वह आराम से खाया-पिया और सो गया। दूसरे दिन दिन-भर यात्रा करके राजा का परिवार वधू के नगर में पहुँचा। उन सब के ठहरने का वहाँ पर अच्छा प्रबंध किया गया था।

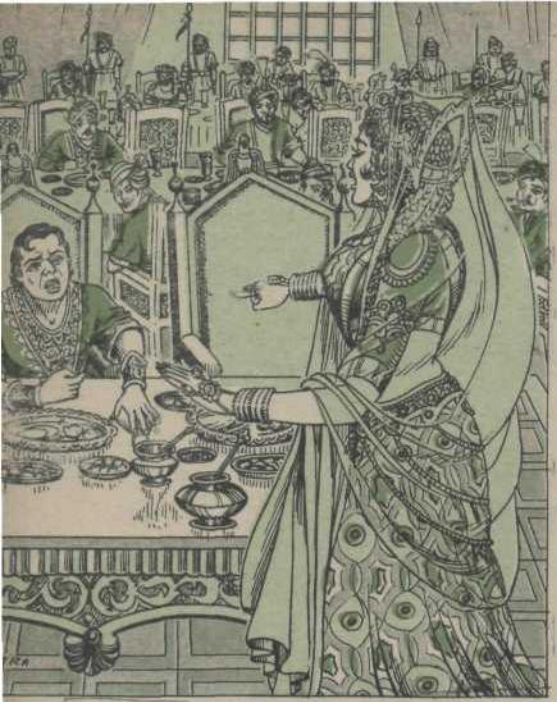

मुहूर्त रात के तीसरे पहर में निश्चय किया गया था। राजा के सेवकों ने अर्ध रात्रि के समय चिरायु को जगाया, स्नान आदि करवा कर सुंदर वस्त्र और आभूषण भी पहनाये। मुहूर्त के समय उसे विवाह की वेदिका पर ले जाया गया। पुरोहित मंत्रोच्छारण करते, होम कर रहा था। तब चिरायु ने अपनी बगल में बैठी राजकुमारी से गुप्त रूप में कहा– "अग्नि को साक्षी बनाकर बुजुर्गों के सामने होनेवाला यह विवाह नाटक तो नहीं होगा न?"

राजकुमारी ने ये बातें ध्यान से सुनीं। उसे आश्चर्य हुआ कि उसका पति ये शब्द क्यों कह रहा है! इसमें कोई रहस्य तो नहीं है।

मुहूर्त के समाप्त होते-होते सवेरा होने को था। राजा अपने परिवार के साथ अपने डेरे में आया। चिरायु के कपड़े व आभूषण उतरवाकर उसके कपड़े वापस दिये गये। उसे एक हज़ार सोने के सिक्के देकर राजा बोला–"तुरंत तुम अपने रास्ते चले जाओ। फिर यदि तुम यहाँ-कहीं दिखाई दिये तो मेरे नौकर तुमको प्राणों से नहीं जाने देंगे।"

चिरायु अपने रास्ते चला गया।

दूसरे दिन विवाह की दावत हो रही थी। राजकुमारी अपने पति की बगल में बैठी थी। उसने अपने पति को देखा, तो उसे संदेह हुआ। वह अपने संदेह का निवारण करने के ख्याल से राजकुमार से बोली–"विवाह की वेदी पर आपने मुझसे कुछ कहा, मगर मंगल वाद्यों के उस शोरगुल में मुझे वे बातें साफ़ सुनायी न दीं, फिर सुनाइये तो।"

राजकुमार ने घबरा कर कहा–"मैंने तो कुछ नहीं कहा?" उसका कंठ भी चिरायु के कंठ जैसा न था। राजकुमारी झट उठ खड़ी हुई और ज़ोर से बोल उठी– "मुझे धोखा दिया गया है। रात को मेरा विवाह इसके साथ नहीं हुआ।"

दावत में खलबली मच गयी। राजकुमारी को उसका पिता अलग ले गया और उसे डांट बतायी। मगर उसने अपने पिता को चिरायु की बातें याद दिलाकर कहा–"उस समय मेरी समझ में यह न आया कि अग्नि को साक्षी बनाकर मेरे कंठ में मंगल सूत्र बांधनेवाले ने यह विवाह नाटक तो नहीं होगा, यह क्यों कहा? मगर अब मेरी समझ में आया। इस सवाल का मेरा यही जवाब है कि वह विवाह नाटक नहीं हो सकता? मैं इस राजकुमार की पत्नी नहीं हूँ। यदि आप से बन सके तो मेरे पति को ले आइये। लेकिन मैं इसके साथ गृहस्थी नहीं चलाऊँगी।"

इसके बाद वधू के पिता ने वर के पिता के नौकरों को घूस दिया तो सारी बातें प्रकट हो गयीं। असली वर को मिरगी का रोग है। रास्ते जानेवाले यात्री के' हाथों राजकुमारी के कंठ में मंगल सूत्र बंधवा दिया गया है।

वर का पिता अपमानित हो अपने दल-बल के साथ अपने देश को लौट गया। वधू के पिता ने अपने नगर की सराय में एक शिला पर बड़े अक्षरों में यह लिखवाया–"विवाह की वेदिका पर वर ने वधू से क्या कहा? यह बतानेवाले

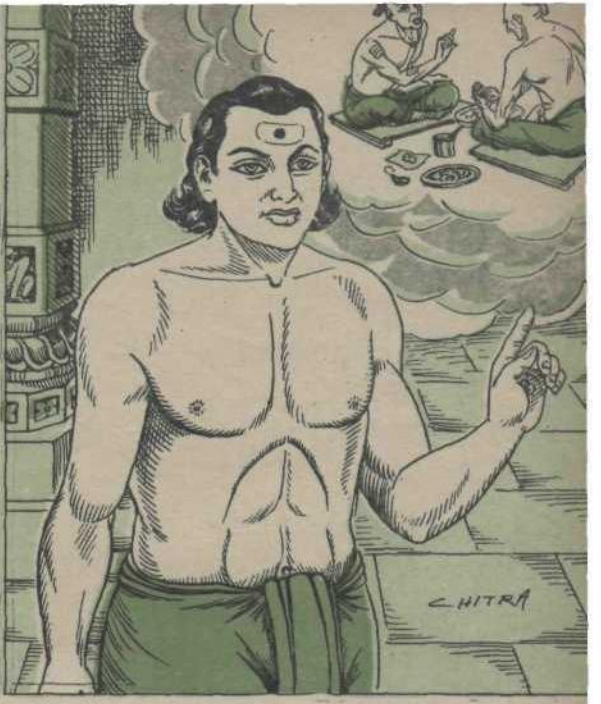

को बढ़िया पुरस्कार दिया जायगा।" यह समस्या किसी की समझ में नहीं आयी। चिरायु ने राजकुमारी से जो बातें कहीं, वे बातें केवल राजकुमारी और उसका पिता जानते थे।

ये बातें कहनेवाला चिरायु अपने नाटकीय विवाह की बात को भूलकर काशी चला गया और वहाँ पर विश्वेश्वर के ध्यान में लग गया। वह पच्चीस साल का हो गया, पच्चीस साल बीत भी गये, लेकिन उसे किसी तरह का खतरा न आया। वह यह सोचकर घर चलने लगा कि जल्दी घर न लौटे तो उसके माता-पिता उसका श्राद्धकर्म करेंगे।

चिरायु फिर उसी नगर में आया। वह यह सोचते उस नगर के सराय में पहुँचा कि उसने जिस राजकुमारी के कंठ में मंगल सूत्र बाँधा है, वह राजकुमार की पत्नी बन गयी होगी और उसके बच्चे भी हुए होंगे। सराय में पहुँचते ही उसे राजा का शिलालेख दिखाई दिया।

सराय में ठहरे कुछ लोगों से चिरायु ने राजकुमारी का समाचार पूछा तो उन लोगों ने बताया कि राजकुमारी न मालूम क्यों अपने पति के साथ नहीं गयी, वह अपने पिता के पास ही रहती है। विवाह के बाद ही राजा ने सराय में यह शिलालेख खुदवाया है।

चिरायु सीधे राजमहल में गया और कहा–"मैं राजा से पुरस्कार लेने आया हूँ। विवाह-वेदिका पर वर ने वधू से जो बातें कहीं, मैं जानता हूँ।"

राजा और राजकुमारी ने चिरायु को महल के भीतर बुला भेजा और पूछा–"वर ने वधू से क्या कहा?"

"वर ने वधू से यह पूछा कि अग्नि को साक्षी बनाकर किया जानेवाला यह विवाह नाटक तो नहीं होगा न? मैंने यह बात कह दी, अब मुझे कौन-सा पुरस्कार देंगे?" चिरायु ने मुस्कुराते हुए राजकुमारी की ओर देखकर कहा।

राजा को लगा कि इसी ने राजकुमारी के कंठ में मंगल सूत्र बाँधा है। राजकुमारी का चेहरा देखने पर यह बात साबित हुई।

"कौन-सा पुरस्कार दूँ? राजकुमारी को दूंगा।" राजा ने कहा।

"मेरा भाग्य होगा।" चिरायु ने उत्तर दिया।

राजा ने चिरायु के साथ राजकुमारी का बड़े वैभव के साथ विवाह किया। उस विवाह में भाग लेने चिरायु के माता-पिता भी आये। उनका विवाह बड़े वैभव के साथ संपन्न हुआ। चिरायु अपने माता-पिता के साथ अपने ससुर के नगर में ही रह गया।

मैत्रेय के चले जाने पर धृतराष्ट्र ने विदुर से किम्मीर के वध का समाचार पूछा। विदुर ने यों बताया: पांडव वनवास करते तीन दिन तक यात्रा करने के बाद एक दिन आधी रात को किम्मीर जंगल से गुजरने लगे। तब एक भयंकर राक्षस उनके सामने रास्ता रोककर आ खड़ा हुआ। उसकी आँखें चमक रही थीं, उसका मुंह खुला हुआ था और वह अपने हाथ फैलाये हुए था। उसकी लाल लाल आँखों की पुतलियाँ, सफ़ेद दांत, सर पर सोने के रंग के बाल, काला शरीर भयावना था। उसके गर्जन को सुनकर जंगली जानवर घबराये भाग रहे थे। उसके हाथ में जलनेवाला एक अंगारा था।

पांडवों, द्रौपदी तथा ब्राह्मणों ने भी उस राक्षस को देखा। द्रौपदी ने उस राक्षस को देख डर के मारे आँखें बंद कीं। पांडव उसे हिम्मत बंधाने लगे। धौम्य उस राक्षस के विनाश के मंत्र पढ़ने लगा।

युधिष्ठिर ने उस राक्षस से पूछा–"तुम कौन हो? इस जंगल में क्यों रहते हो?"

इस पर राक्षस ने उत्तर दिया–"मैं बकासुर का भाई हूँ, मेरा नाम किम्मीर है। मैं इस काम्यक वन में स्वेछा के साथ घूमा करता हूँ। मनुष्यों को मारकर खाता हूँ। इसलिए इस प्रदेश में कोई भी मनुष्य आने की हिम्मत नहीं करता। तुम लोग यहाँ पर क्यों आये

२८. किम्मीर का वध

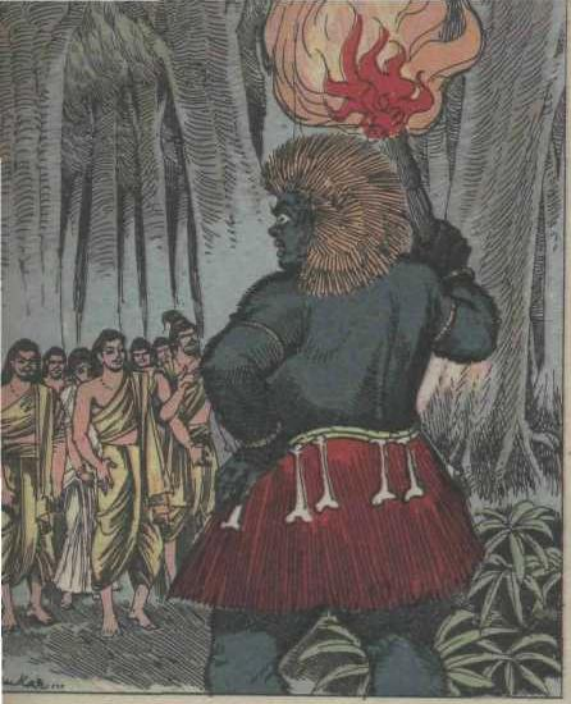

हो? इसलिए तुम सबको मैं अभी खा डालता हूँ।"

युधिष्ठिर ने किम्मीर से कहा–"हम लोग पांडव हैं। मेरा नाम युधिष्ठिर है। ये चारों मेरे भाई हैं, हम एक शर्त का पालन करने के लिए वनवास करने के निमित्त चले आये हैं।"

यह समाचार सुनकर किम्मीर बोला–"क्या कहा? यही भीम है? मैं भीम का वध करने के लिए बहुत दिनों से इंतज़ार कर रहा था। आज मेरी इच्छा की पूर्ति होनेवाली है। इसने मेरे भाई बक का वध किया है। मेरे मित्र हिडिंब का वध करके उसकी बहन हिडिंबा को हड़प लिया है। यह दुष्ट मूर्ख है। इसलिए इस जंगल में प्रवेश करके मेरे हाथों में पड़ गया है। मैं इसके खून का बक और हिडिंब के वध के बदले तर्पण करूँगा। तुम सब लोगों के सामने इस दुष्ट का खून पीकर, इसका मांस खाकर हमारी जाति का बदला लूँगा।"

युधिष्ठिर ने क्रोध में आकर कहा–"छी: दुष्ट, मुँह बंद करो।" इसी समय भीम ने एक पेड़ उखाड़ा और किम्मीर पर हमला करने को तैयार हो गया। अर्जुन ने गांडीव को तैयार रखा। भीम ने अर्जुन को रोकते हुए कहा–"अर्जुन, तुम ठहर जाओ। मैं अभी इस क़मबख़्त को यमलोक में भेज देता हूँ।" ये शब्द कहते भीम ने उस पेड़ को किम्मीर पर फेंक दिया।

चोट खाकर किम्मीर नाराज़ हो गया। उसने आग की उस लकड़ी को भीम पर फेंका। भीम ने अपने बायें पैर से रौंधकर आग बुझा दी। इसके बाद वे दोनों दो पेड़ों को उखाड़कर लड़ने लगे। फिर एक दूसरे पर शिलाओं की वृष्टि करने लगे। अंत में एक दूसरे पर टूट पड़े। दोनों में भयंकर युद्ध होने लगा।

भीम ने देखा कि किम्मीर थक गया है। मौक़ा पाकर उस राक्षस को भीम

ने अपनी कांख में दबाया। खूब घुमाकर नीचे पटक दिया। उसकी कमर पर पैर रखकर दबाया। आखिर उसका सर और पैर तोड़कर मार डाला। इस तरह किम्मीर गरजते मर गया। भीम ने उसकी लाश को दूर फेंक दिया। उस जंगल को किम्मीर की यातना से मुक्त किया। इस पर पुरोहित धौम्य तथा द्रौपदी ने भीम का अभिनंदन किया।

विदुर के मुँह से किम्मीर के वध का समाचार सुनकर धृतराष्ट्र दुख में डूब गया।

यादव तथा पांचाल देश के राजा को जब यह समाचार मिला कि पांडव जुए में दगा खाकर हार गये हैं और वनवास कर रहे हैं, तब उन्हें देखने यादव और पांचाल आ पहुँचे। यादवों को साथ ले कृष्ण आये थे। पांडवों की हालत पर दुखी हो कृष्ण ने कहा–"पापी दुर्योधन, शकुनि और कर्ण के रक्त से पृथ्वी को सींचना होगा। ऐसे दुष्टों का वध करना उत्तम धर्म कहलाता है। उन सबको एक साथ मारकर हम युधिष्ठिर का राज्याभिषेक करेंगे।"

द्रौपदी अपने भाई धृष्टद्युम्न इत्यादि पांचालों को साथ ले कृष्ण के पास आयी और यह समाचार सुनाकर रोने लगी कि कौरवों ने उसका कैसे पराभव किया है।

कृष्ण ने उसे सांत्वना देते हुए कहा–"द्रौपदी, जिन दुष्टों ने तुम्हारा अपमान

किया है, उनका विनाश होकर ही रहेगा। उनकी पत्नियाँ तुमसे भी अधिक दुख के सागर में डूबेंगी। शीघ्र ही पांडव राजाधिराज बनेंगे। तुम उनकी पट्टमहिषी बनोगी।"

अर्जुन और धृष्टद्युम्न ने भी द्रौपदी को सांत्वना दी।

इसके बाद कृष्ण ने युधिष्ठिर से कहा– "जुए के समय अगर मैं द्वारका में होता तो बिन बुलाये उस जुए को देखने आता। यदि मैं वहाँ पर होता तो जुआ खेलने न देता। दुर्योधन इनकार करता तो वहीं पर उसे उचित दण्ड मिलता। मेरे द्वारका में लौटने पर युयुधान ने मुझे ये सारी बातें बतायीं। तुरंत तुम लोगों को देखने में चला आया।"

"उन दिनों में तुम द्वारका में क्यों न थे? कहाँ गये थे?" युधिष्ठिर ने पूछा।

"शिशुपाल के भाई साल्व ने सोचा कि राजसूययाग के समय मैंने शिशुपाल का वध किया है। इसलिए उसने मुझसे बदला लेना चाहा। इस कारण मैं उसके नगर सौभ नगर पर हमला करने गया था।" इस प्रकार कृष्ण ने वह सारी कहानी यों बतायी :

साल्व को जब मालूम हुआ कि मैंने शिशुपाल का वध किया है, तब वह सौभ नामक विमान पर चढ़कर द्वारका पर हमला करने आया। उस वक़्त मैं इन्द्रप्रस्थ में ही था। इसलिए द्वारका की रक्षा करने के सारे प्रयत्न उग्रसेन ने किये। दुर्ग की रक्षा के लिए उन्होंने वीरों को नियुक्त किया। और साल्व के साथ युद्ध करने के लिए गद, सांब, प्रद्युम्न इत्यादि को भेजा। उस युद्ध में प्रद्युम्न ने अपने पराक्रम का परिचय देकर साल्व की सेनाओं को तितर-बितर कर दिया।

इतने में मैं इंद्रप्रस्थ से द्वारका लौट आया। जब मुझे यह समाचार मिला, तब मैंने यह शपथ की कि साल्व का वध करके ही द्वारका में क़दम रखूंगा।

तब मैं युद्ध के लिए सन्नद्ध हो चल पड़ा। यह ख़बर लगते ही साल्व अपने सौभ नामक विमान पर समुद्री तट की ओर भाग गया। मैं उसका पीछा करने लगा।

साल्व ने अपने विमान को समुद्र पर आसमान में रोककर हँसते हुए मुझे युद्ध के लिए निमंत्रित किया।

मैंने साल्व पर अनेक बाण छोड़े, परंतु उनमें से एक भी साल्व को न लगा। मगर साल्व के बाण मेरी सेना पर वर्षा की भांति आ गिरने लगे। यह दृश्य देख विमान में बैठे हुए साल्व के अनुचरों ने तालियाँ बजायीं। उस ध्वनि के आधार पर मैंने बाण चलाकर कुछ लोगों को मारा। फिर भी विमान की सहायता से साल्व ने माया-युद्ध बड़ी कुशलता के साथ किया। मेरे सारथी दारुक को भी संदेह हुआ कि मुझे विजय प्राप्त न होगी।

इस हालत में मेरे पास कृतवर्मा का दूत आया और उसने यह समाचार दिया कि साल्व ने अदृश्य रूप में द्वारका में प्रवेश कर मेरे पिता वसुदेव का वध किया है। मैं यह सोच ही रहा था कि इस समाचार पर कैसे विश्वास किया जाय, तभी वसुदेव का शव आसमान से नीचे गिरते दिखाई दिया। तुरंत मैं दुखी हो रथ में एक ओर लढ़क पड़ा।

मेरे हाथ से धनुष छूटकर गिर पड़ा। तत्काल ही मेरी सेना में हाहाकार मच गया।

मुझे यह समझते देर लगी कि यह सब साल्व की माया है। साल्व की समस्त मायाओं को समझने का प्रयत्न करते हुए मैंने भयंकर युद्ध किया और अंत में अपने चक्रायुध का प्रयोग करके साल्व के विमान, साल्व तथा विमान में बैठे हुए लोगों का नाश किया। उस युद्ध में विजयी होकर मैं जब द्वारका में लौटा तब मुझे समाचार मिला कि पांडव वनवास करने चले गये हैं। तुरंत मैं पांडवों को देखने आ पहुँचा।

पांडवों को देखने यादव, पांचाल तथा नैवेय जो आये थे, वे सब अपने अपने देशों को फिर लौट गये।

पांडवों ने वनवास करते हुए भविष्य में होनेवाले युद्ध के बारे में विचार किया। एक दिन युधिष्ठिर ने अर्जुन से कहा– "अर्जुन, प्राचीन काल में वृत्तासुर की धाक से तंग आकर सभी देवताओं ने अपने अपने अस्त्र इंद्र के पास रख दिये। व्यास महर्षि ने मुझे प्रतिस्मृति नामक विद्या सिखायी है, तुम उस विद्या के द्वारा इंद्र को प्रसन्न कर उन अस्त्रों को लेते आओ। भावी युद्ध में दुर्योधन के पक्ष में भीष्म, द्रोण, कर्ण इत्यादि हमारे साथ युद्ध करनेवाले हैं। मैं जब यह सोच रहा था कि उन्हें जीतना कैसे संभव होगा, तब व्यासमहर्षि ने प्रत्यक्ष होकर मुझे प्रतिस्मृति नामक विद्या प्रदान की और वह विद्या तुम्हें सिखाने को बताया। यह विद्या तुम मुझसे ग्रहणकर आज ही उत्तरी दिशा में चले जाओ।"

अर्जुन ने युधिष्ठिर से प्रतिस्मृति विद्या ग्रहण की। अग्नि की आराधना करके उसकी प्रदक्षिणा की। कवच, गांडीव तथा तूणीर आदि धारण किया, धौम्य तथा युधिष्ठिर के लिए प्रदक्षिणापूर्ण नमस्कार किये। तब उनसे विदा लेकर चल पड़ा। द्रौपदी उसे विदा देने के लिए थोड़ी दूर आयी और विदाई देते हुए बोली–"आप जिस कार्य पर जा रहे हैं, वह सफल हो! आपकी अनुपस्थिति हम सबको खलेगी ही। हम लोग आपके कुशल-क्षेम की कामना करते हुए आपके आगमन की प्रतीक्षा करते रहेंगे। हमारे सभी सुख-दुख आप पर निर्भर हैं, विघ्नों को दूरकर कार्य को सफल बनाकर लौट आइये।"

अर्जुन जंगलों से होते हुए यात्रा करने लगा। मार्ग मध्य में हिमालय तथा गंधमादन पर्वतों को पार कर इंद्रकील पर पहुँचा। वह जब बड़ी शीघ्रता के साथ आगे बढ़ा जा रहा था तब उसे यह शब्द

सुनायी पड़ा–"ठहर जाओ!" अर्जुन ठहर कर यह सोचने लगा कि इस निर्जन प्रदेश में कौन पुकार रहे हैं, चारों तरफ़ उसने नज़र दौड़ायी, तब उसे एक वृक्ष के नीचे एक तपस्वी दिखाई दिया। वह तपस्वी पिंगल वर्ण की देहवाला था, देखने में दुर्बल था, किंतु मुखमण्डल पर ब्रह्मतेज दमक रहा था।

अर्जुन उस तपस्वी के पास जाकर खड़ा हो गया।

"बेटा, तुम कौन हो? युद्ध में जानेवाले व्यक्ति के समान कवच और आयुध धारण कर इस जंगल में क्यों घूमते हो? यहाँ पर वे ही लोग रहते हैं, जिन लोगों ने अपनी इंद्रियों पर विजय पायी हो। ऐसे स्थान पर आयुधों की क्या आवश्यकता है? इनको दूर फेंक दो।" तपस्वी ने कहा।

अर्जुन ने तपस्वी की बात नहीं मानी। तपस्वी ने बहुत-कुछ समझाया, पर कोई प्रयोजन न रहा। इस पर उस तपस्वी ने प्रसन्न होकर कहा–"बेटा, मैं तुम्हारी लगन को देख प्रसन्न हूँ। मैं इंद्र हूँ। तुम जो वर चाहते हो, माँग लो!"

अर्जुन ने इंद्र को नमस्कार करके प्रार्थना की–"हे देव! मुझे दिव्य अस्त्र प्रदान कीजिये।"

इस पर इंद्र ने कहा–"पगले, तुमको अस्त्र ही किसलिए? पुण्यलोक ही प्रदान करूँगा। सुख के साथ रह जाओ।"

"मेरे भाई जंगलों में नाना प्रकार की यातनाएँ भोग रहे हैं, यह सब देखते हुए मैं अकेले सुख भोगूँ? यह मुझ से नहीं हो सकता। मैं क्षत्रिय हूँ। मेरे मरने के बाद भी मेरा यश अमर रहें। लेकिन मैं सुख के वास्ते अपयश नहीं मोल लूंगा।" अर्जुन ने जवाब दिया।

अर्जुन के दृढ़ निश्चय पर प्रसन्न होकर इंद्र ने कहा–"बेटा, यदि तुम्हारी इच्छा की पूर्ति होनी है, तो तुमको पहले शिवजी के दर्शन करना होगा। जाओ, पहले उनके दर्शन कर लो।" ये बातें कहकर इंद्र अंतर्धान हो गया!

शिवपुराण

[५]

हिमवान ने अपनी पत्नी के साथ शिवजी को साष्टांग प्रणाम किया और फूल-चंदन इत्यादि समर्पित कर हाथ जोड़े खड़ा हो गया। शिवजी ने आँखें खोलकर हिमवान को देखा और कहा–"हिमवान, तुम पवित्र व्यक्ति हो, इसीलिए तुम्हारे पर्वत के इस कैलास शिखर पर मैं तपस्या कर रहा हूँ।"

"हे देव, आपका यहाँ पर तपस्या करना मेरे लिए भाग्य की बात है। मैं बराबर ध्यान रखता हूँ कि आपकी तपस्या में कोई विघ्न उपस्थित न हो!" हिमवान ने उत्तर दिया।

शिवजी ने प्रसन्न होकर कहा–"हिमवान, तुम पर मैं प्रसन्न हूँ, इसलिए कोई वर माँग लो।"

"मेरी पुत्री पार्वती को आपकी सेवा करने की अनुमति दीजिये।" हिमवान ने निवेदन किया।

"जो तप करते हैं, उनके लिए नारियों की सेवा उचित मालूम नहीं होती! चाहे तो तुम आकर मेरी सेवा करते जाते रहो।" शिवजी ने कहा।

"मेरी पुत्री कन्या है। महादेवी के वरदान से पैदा हुई है। आप जैसे विरागी का उसके द्वारा तपस्या-भंग कैसे होगा? इसलिए मेरी प्रार्थना स्वीकार करके मेरी कन्या को आपकी सेवा करने की अनुमति दीजिये।" हिमवान ने बिनती की।

शिवजी ने मान लिया।

सतीदेवी की मृत्यु के बाद शिवजी कैलासपर्वत को लौटकर तपस्या करने

अंतिम पृष्ठ का चित्र

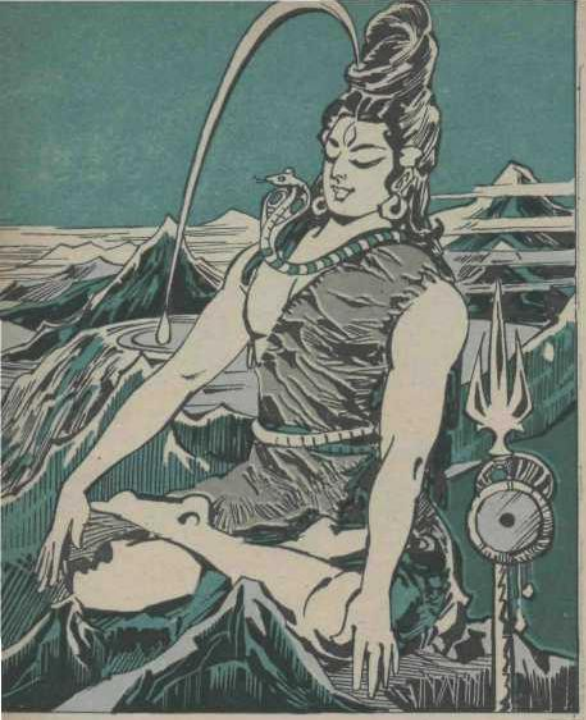

लगे। तपस्या की गरमी से शिवजी के भाल से पसीने की एक बूंद पृथ्वी पर गिर पड़ी, तब उस बिंदु से एक पुत्र पैदा हुआ। वह आजानुबाहू था। उसके शरीर की कांति लाल थी। वह स्थूलकाय था। भूदेवी ने उस पुत्र को उठा लाकर शिवजी को दिखाया।

शिवजी ने भूदेवी को देख कहा—"तुम धन्य हो। मेरे पसीने से पैदा हुआ यह पुत्र भौम नाम से प्रसिद्ध होकर तुम्हारे लिए यश का संपादन करेगा।"

भौम बड़ा होने पर काशी चला गया, वहाँ पर ईश्वर के प्रति घोर तपस्या की! ईश्वर ने दर्शन देकर भौम को ग्रहमण्डल में स्थान दिलाया। उसी भौम के कुज और अंगारक नाम पड़े।

शिवजी के तपस्या-काल में ही गंगा का पृथ्वी पर अवतरण हुआ। जब ऋषि और पितृदेवता ने ब्रह्मा से निवेदन किया कि भूलोक में पानी नहीं है, तब ब्रह्मा ने अपने कमण्डल से एक बूंद को छोड़ दिया। वह महान धारा बनकर पृथ्वी की ओर बहने लगी। शिवजी ने भांप लिया कि इस धारा के जरिये पृथ्वी को खतरा होगा, इसलिए उन्होंने उसे अपने जटाजूट में बांध लिया और एक बूंद को मानससरोवर में छोड़ फिर तपस्या में लीन हो गये।

उधर दक्ष की एक पुत्री दिति जो कश्यप की दूसरी पत्नी थी, उसने हिरण्यकश्यप तथा हिरण्याक्ष का जन्म दिया। वे दोनों बलवान और क्रूर बने, सारे लोकों को सताने लगे, तब विष्णु ने वराह और नृसिंह का अवतार लेकर उनका संहार किया।

पुत्र-शोक में परेशान दिति ने कश्यप के अनुग्रह से फिर गर्भधारण किया। इंद्र ने इस भय से उसके गर्भ के पिंड को अपने वज्रायुध से टुकड़े-टुकड़े कर दिये कि उसका एक और शत्रु पैदा होगा। मगर कश्यप के अनुग्रह से पिंड के वे खण्ड

नष्ट न हुए, बल्कि मरुत आदि के रूप में जन्म लेकर इन्द्र की सेवा करने गये।

इस पर दिति निराश हो गयी और कश्यप से पुनः पुत्रदान करने की प्रार्थना की। कश्यप ने उसे सलाह दी कि कुछ समय तक वह ब्रह्मा के प्रति तपस्या करे। दिति ने वैसा ही किया और बाद को कश्यप के अनुग्रह से एक वज्रकाय पुत्र को जन्म दिया। उसके वज्रकाय को देख उसका नाम वज्रांग रखा गया।

वज्रकाय के जन्म के समय अनेक उल्कापात, भूकंप और तूफ़ान भी हुए। इसे देख देवता भी डर गये। दिति ने बड़े ही लाड़-प्यार से वज्रांग को पाल-पोसकर बड़ा किया और कहा—"बेटा, देवताओं ने मुझे बड़ा दुख पहुँचाया है। उन लोगों ने तुम्हारे भाई हिरण्यकश्यप तथा हिरण्याक्ष को विष्णु के हाथों में मरवा डाला है। मरुत आदि के मेरे गर्भ में रहते समय इंद्र ने मेरे गर्भकोश को काट डाला है। इस तरह देवताओं ने मुझे अनेक प्रकार सताया है, इसलिए तुम देवताओं से युद्ध करके मेरा बदला चुकाओ।"

अपनी माँ का उपदेश सुनकर वज्रांग ने राक्षसों की सेना इकट्ठी की। रणभेरी बजाकर इंद्र के नगर को घेर लिया। देवताओं को सताकर इंद्र को बन्दी बनाया

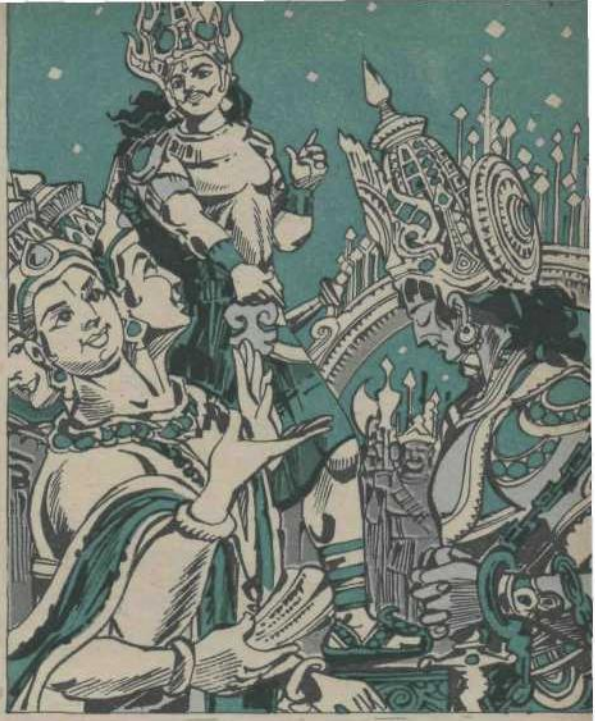

और स्वर्ग पर आधकार कर लिया। यह समाचार सुनकर दिति बहुत ही प्रसन्न हो उठी। देवताओं ने ब्रह्मा के पास जाकर अपनी पराजय की बात सुनायी। ब्रह्मा ने सावधानी से सारी बातें सुनीं, तब कश्यप को साथ लेकर वज्रांग के पास गया, उसे समझा-बुझाकर इंद्र को मुक्त कर स्वर्ग वापस लौटाने की बात बतायी।

"मैंने राज्य और धन के वास्ते देवताओं से युद्ध नहीं किया। यह इंद्र दुष्ट है। इसने मेरी माता के मन को दुखाया है। उसके गर्भ को खण्डों में काट डाला है। यह मुक्त करने योग्य नहीं है, फिर भी आपकी बात मानकर इसे मैं मुक्त कर

रहा हूँ। यदि इसने मेरी माता को दुख पहुँचाया न होता तो आज इसकी यह हालत न होती।" वज्रांग ने कहा।

इस पर ब्रह्मा ने प्रसन्न होकर वज्रांग से वर माँगने को कहा।

"मुझे परब्रह्मा का स्वरूप और प्राणियों पर दया के अतिरिक्त कुछ नहीं चाहिए। ये दोनों वर मुझे प्रदान कीजिये।" वज्रांग ने कहा।

ब्रह्मा को और अधिक प्रसन्नता हुयी। उसने वरांगी नामक एक सुंदर कन्या को वज्रांग की पत्नी के रूप में प्रदान किया। उसका विवाह करके कश्यप के साथ वापस चला गया। वज्रांग शिवभक्त हो अपने नगर को लौटा और ईश्वर की पूजा करते अपने दिन काटने लगा। कुछ समय बीत गया। अपनी पत्नी की सेवा-शुश्रूषा से प्रसन्न हो वज्रांग ने वरांगी से कहा– "तुम जो वर चाहती हो, माँग लो।"

"महाशक्तिशाली, इंद्र आदि देवताओं को जीतनेवाला तथा संसार में अपने यश को सदा के लिए क़ायम रख सकनेवाला पुत्र मुझे चाहिए।" वरांगी ने वर माँगा।

अपनी पत्नी के मुँह से ये बातें सुनकर वज्रांग को दुख हुआ। वरांगी ने नारी सहज चंचल चित्त के कारण देवताओं के विरोधी पुत्र माँगा। ऐसे व्यक्ति को विष्णु अधिक समय तक जीने नहीं देंगे। मगर वज्रांग को अपने वचन से मुकर जाना पसंद न था। इसलिए उसने अनेक वर्षों तक ब्रह्मा के प्रति घोर तपस्या की।

ब्रह्मा ने प्रत्यक्ष होकर वज्रांग से पूछा– "मैं तुम्हारी तपस्या पर प्रसन्न हूँ। माँगो, कौन-सा वर चाहते हो?"

"देव, मेरी पत्नी देवताओं को जीतने वाला पुत्र चाहती है, उसे ऐसे पुत्र को प्रदान कीजिये।" वज्रांग ने विनती की।

ब्रह्मा ने वज्रांग को यह वर प्रदान किया और वह अंतर्धान हो गया। वज्रांग ने घर लौटकर अपनी पत्नी को बताया कि उसकी इच्छा की पूर्ति होगी।

११५. मिलान का गिरजाघर

संसार के बड़े गिरजाघरों में यह दूसरा है। (इससे बड़ा गिरजाघर इटली देश में स्थित रोन नगर का सेंट पीटर गिरजाघर है) मिलान का गिरजाघर केवल संगमरमर पत्थरों से निर्मित है और संसार के प्रसिद्ध आश्चर्यों में से एक माना जाता है। इसका निर्माण ई. सन्. १३८६ में शुरू हुआ और १८०५ तक चलता रहा। इसकी लंबाई ४८६ फुट है और चौड़ाई २८९ फुट। इसके मध्य गोपुर में "वर्जिन" (ईसा मसीह की माँ) की मूर्ति है। यह भूमि के तल से ३५४ फुट ऊँचाई पर निर्मित हुआ है। इस गिरजाघर के ऊपरी भाग में १३५ गोपुर हैं। कहते हैं कि ये स्वर्ग को दिखा रहे हैं। दूसरे विश्वयुद्ध के समय इटली के अन्य नगरों के साथ मिलान नगर भी बंबों का शिकार हो गया है।

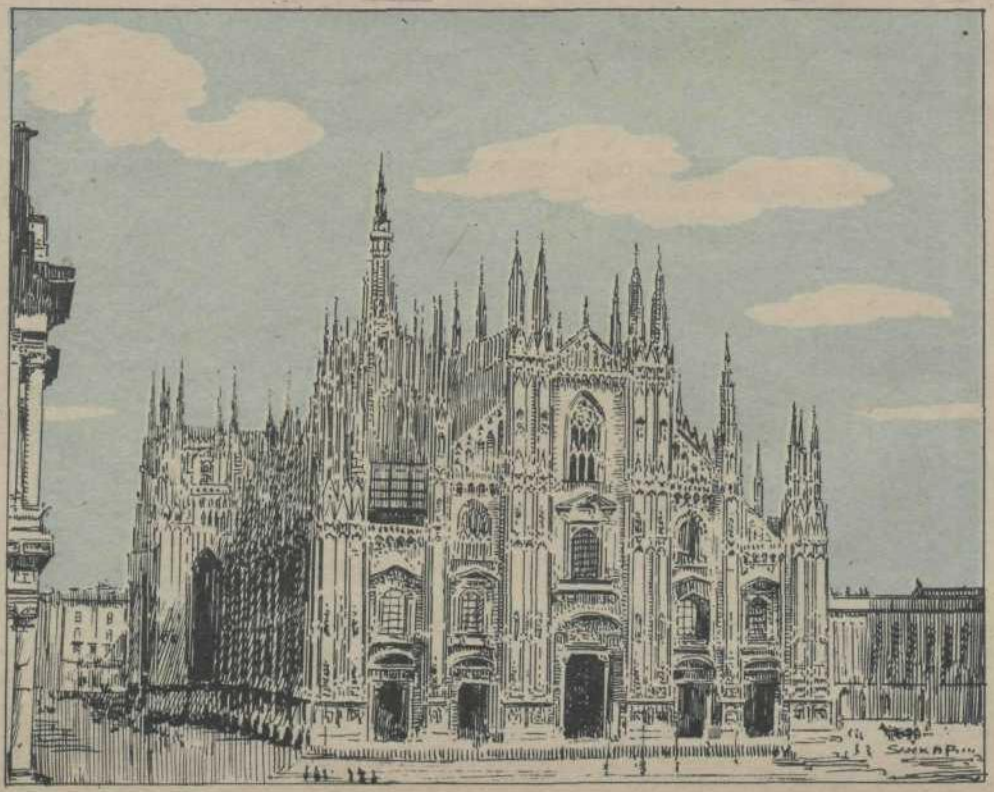

Photo by Anant Desai

पुरस्कृत परिचयोक्ति **चल पड़ी लेकर गगरिया!**

प्रेषक: **चंद्रेश शोला,** अरुण बुक स्टाल, करगी रोड, (म. प्र.)

Photo by Anant Desai

पुरस्कृत परिचयोक्ति **ज्यों सुनी मोहन की मुरलिया !**

प्रेषक : **चंद्रेश शोला,** अरुण बुक स्टाल, करगी रोड, (म. प्र.)

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता

सितम्बर १९७१ :: पारितोषिक २०)

कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें।

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिये। परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिखकर निम्नलिखित पते पर तारीख़ १० जुलाई १९७१ के अन्दर भेजनी चाहिये।

फ़ोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन,
वड़पलनी, मद्रास-२६

दूसरा कवर पृष्ठ :

ब्रह्मकुंड, हरिद्वार

तीसरा कवर पृष्ठ :

महिषासुर, मैसूर

Printed by B. V. REDDI at The Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for Chandamama Publications, 2 & 3, Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'

क्या आप का बच्चा दुबला-पतला है? क्या उसके आहार में पोषकता की कमी है? क्या उसे अच्छी तरह भूख नहीं लगती? तो उसे फ़ेराडॉल दीजिये...

और देखिए कि उसका विकास कितना शक्तिशाली और भरपूर होता है। केवल फ़ेराडॉल ही दूध, अनाजों, सब्जियों, फलों, और अंडों जैसे प्राकृतिक पदार्थों की श्रेष्ठता और पौष्टिकता से समृद्ध हैं जो यह आपके बच्चों को लोहे, विटामिनों और खनिज पदार्थों के रूप में प्रदान करता है। फ़ेराडॉल में सम्मिलित ये लोहा विटामिन्स और खनिज पदार्थ आप के बच्चे की हड्डियों और दांतों के मजबूत निर्माण, पुट्ठों के विकास, रक्त की समृद्धि, शारीरिक प्रतिरोधक शक्ति के निर्माण उत्तम दृष्टि और भरपूर तथा स्वास्थ्यपूर्ण विकास के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। अपने बच्चे को रोज़ाना सुबह और रात को फ़ेराडॉल दीजिये। फ़ेराडॉल सादा ही दीजिये या दूध में मिलाकर दीजिये। याद रखिए फ़ेराडॉल पूरे परिवार के लिए उपयुक्त है।

फ़ेराडॉल®

अत्यंत स्वादिष्ट
पूरे परिवार के लिए उपयुक्त

पार्क-डेविस उत्पादन

® रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क, रजिस्टर्ड यूज़र्स - पार्क डेविस (इंडिया) लिमिटेड, बम्बई-७२ एएस.

JAISONS 6

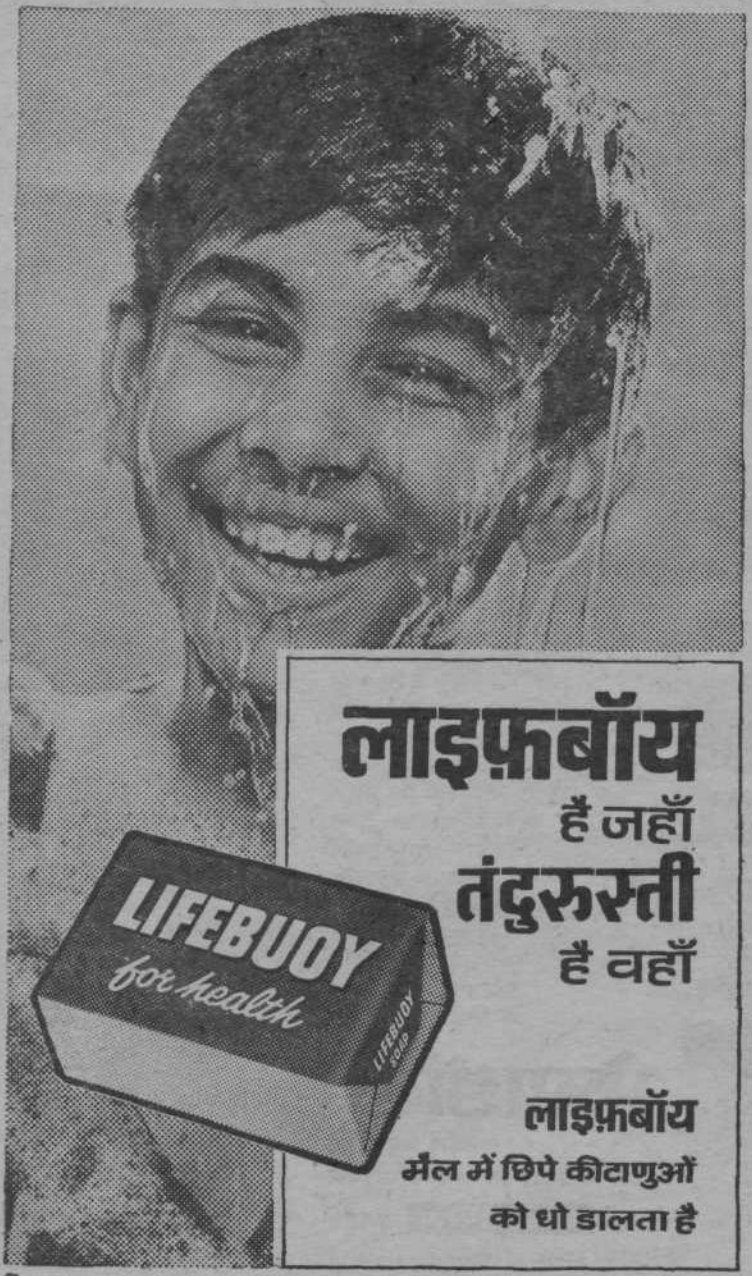

लिटास- L. 61-77 HI
हिन्दुस्तान लीवर का एक उत्कृष्ट उत्पादन

जड़ी बूटियों से निर्मित

गाय छाप

ब्राह्मी आँवला तैल

काला दन्त मंजन

उपरोक्त उत्पादन केवल तैल व मंजन ही नही,
आयुर्वेदिक ओषधियां है।

आयुर्वेद सेवाश्रम प्रा. लि. उदयपुर • वाराणसी • हैदराबाद

hero8 -AS 95

बच्चों केलिये
एक नई
आकर्षक
पाक्षिकपत्रिका
लोटपोट
पढ़िये और हंसते हंसते
लोटपोट
हो जाइये

हंसी से भरपूर कहानियाँ, कार्टून और पहेलियाँ।

महीने में दो बार, हर पहली तथा 15 तारीख को, अपने पत्र-विक्रेता से प्राप्त करें या 14 रुपये (24 अंक) 7 रुपये (12 अंक) भेज कर हमसे मंगवायें।

मूल्य प्रति अंक
केवल 60 पैसे

अपने निकटतम न्यूज़ एजेंट से प्राप्त करें।

लोट पोट, ए-5 माया पुरी, नई देहली-27

GAYWAYS

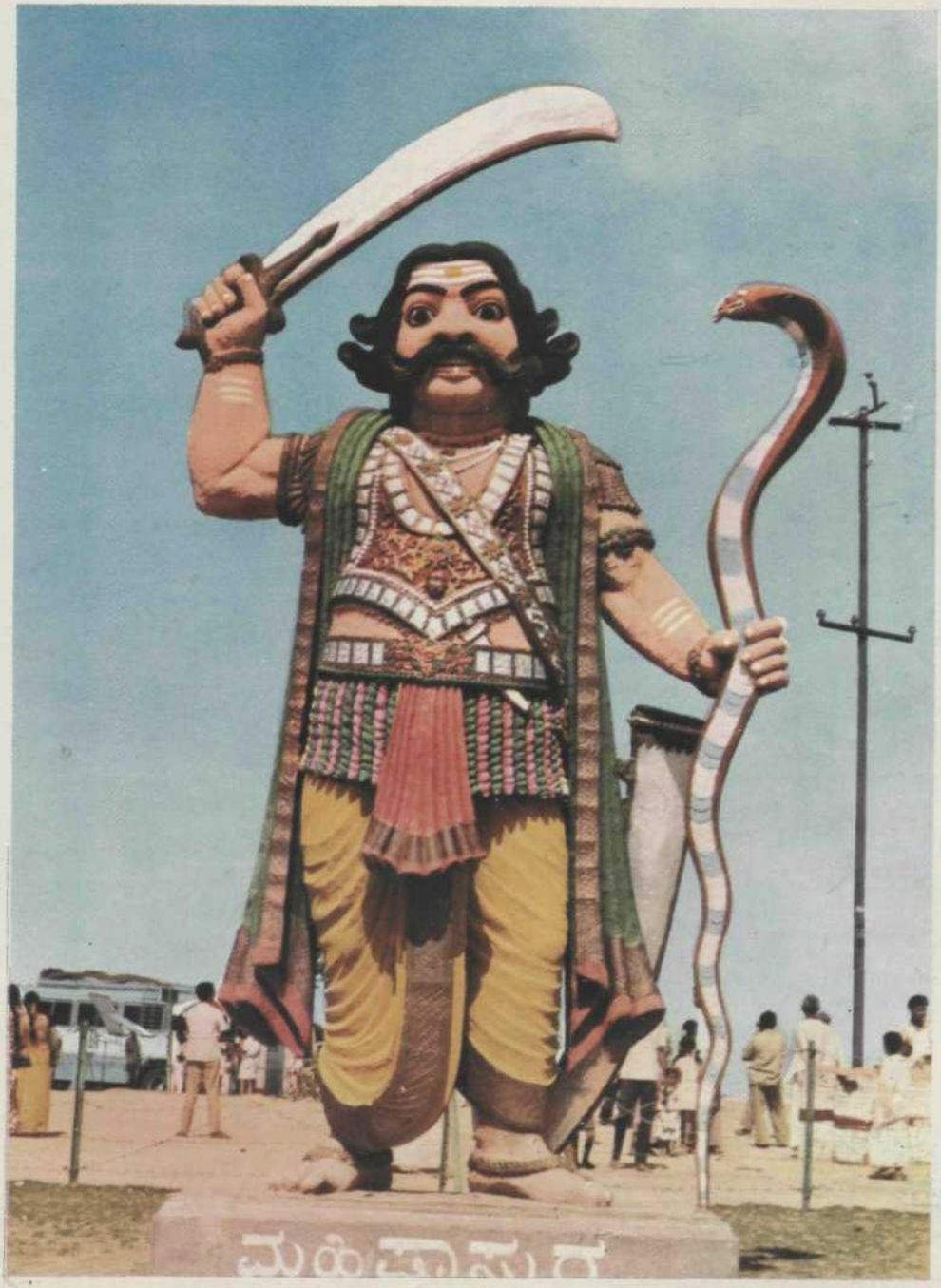
ಮಹಿಷಾಸುರ